सचित्र बाल कथाएँ

विद्या की संपदा

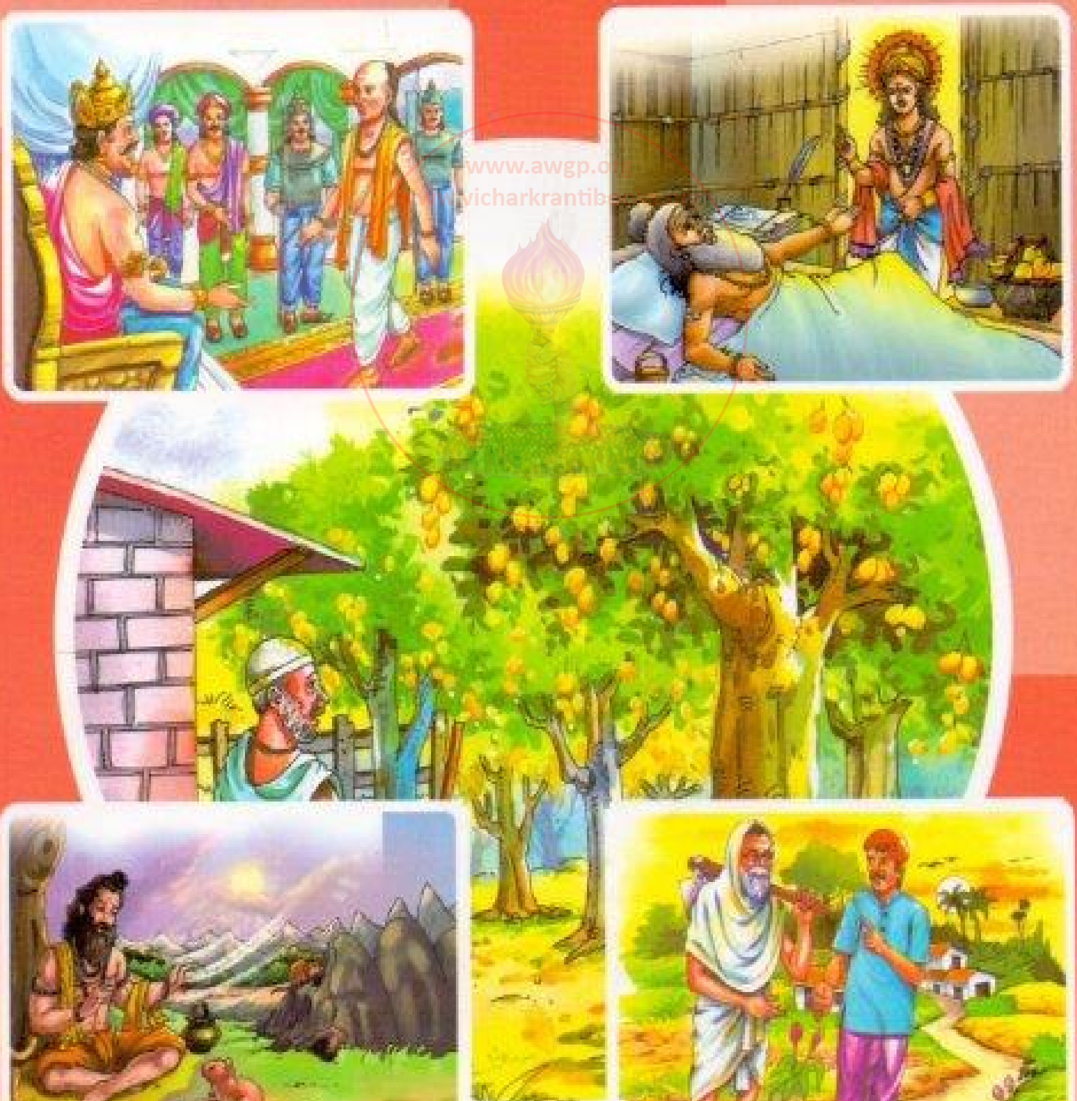

17

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

छात्र की योग्यता

त्रिचनापल्ली का एक छात्र विद्यालय में प्रवेश लेने गया। नियमानुसार उसकी परीक्षा ली गई। योग्यता देखकर अध्यापक ने सिफारिश की—इस विद्यार्थी की बुद्धि और विद्या इतनी प्रखर है कि उसे कॉलेज में दाखिला मिलना चाहिए। हाईस्कूल के प्राध्यापक ने लड़के को बुलाया और उस सलाह से अवगत कराया। विद्यार्थी ने जवाब दिया—"मास्टर साहब! परीक्षा में अधिक अंक पाने का यह अर्थ नहीं कि जो एक क्रम-व्यवस्था बनी है उसे तोड़ा जाए। एक-एक सीढ़ी पर चढ़ते हुए ही उन्नति के अंतिम बिंदु तक पहुँचा जा सकता है तो फिर मैं ही बीच से छलांग क्यों लगाऊँ?" स्वल्प श्रम से मिलने वाली सफलता को ठुकरा देने वाले इस छात्र को आज सब चंद्रशेखर वेंकटरमन के नाम से जानते हैं। जिन्हें वैज्ञानिक अनुसंधानों पर नोबुल प्राइज मिला।

यह विनम्रता-निरहंकारिता ही उच्चस्तरीय उपलब्धियों की पृष्ठभूमि बनाती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पांडवों की परीक्षा

अर्जुन ने लक्ष्यवेध करके द्रौपदी का स्वयंवर जीत लिया। सभी भाई वेश बदले हुए थे। द्रुपद तथा उनके मंत्रियों ने सोचा, लक्ष्य वेध कर लेने से शर्त तो पूरी हुई, पर ये सुसंस्कारी-कुलीन व्यक्ति हैं या नहीं, यह कैसे पता लगे।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्होंने उनके निवास की व्यवस्था की। उसमें सभी आवश्यक वस्तुएँ थीं, किंतु उन्हें बेतरतीब रख दिया गया। पांडव उस निवास में ठहर गए। दूसरे दिन देखा गया कि सारी वस्तुएँ यथास्थान हैं, उनकी स्वच्छता बढ़ गई है। यह देखकर मंत्रियों ने निर्णय कर लिया कि निश्चित ही किसी संभ्रांत-सुसंस्कृत परिवार के व्यक्ति हैं।

कपड़ा और सामान्य व्यक्ति भी साफ-सुथरा हो, तो आकर्षक लगता है। उससे व्यक्ति के संस्कारों का पता चल जाता है।

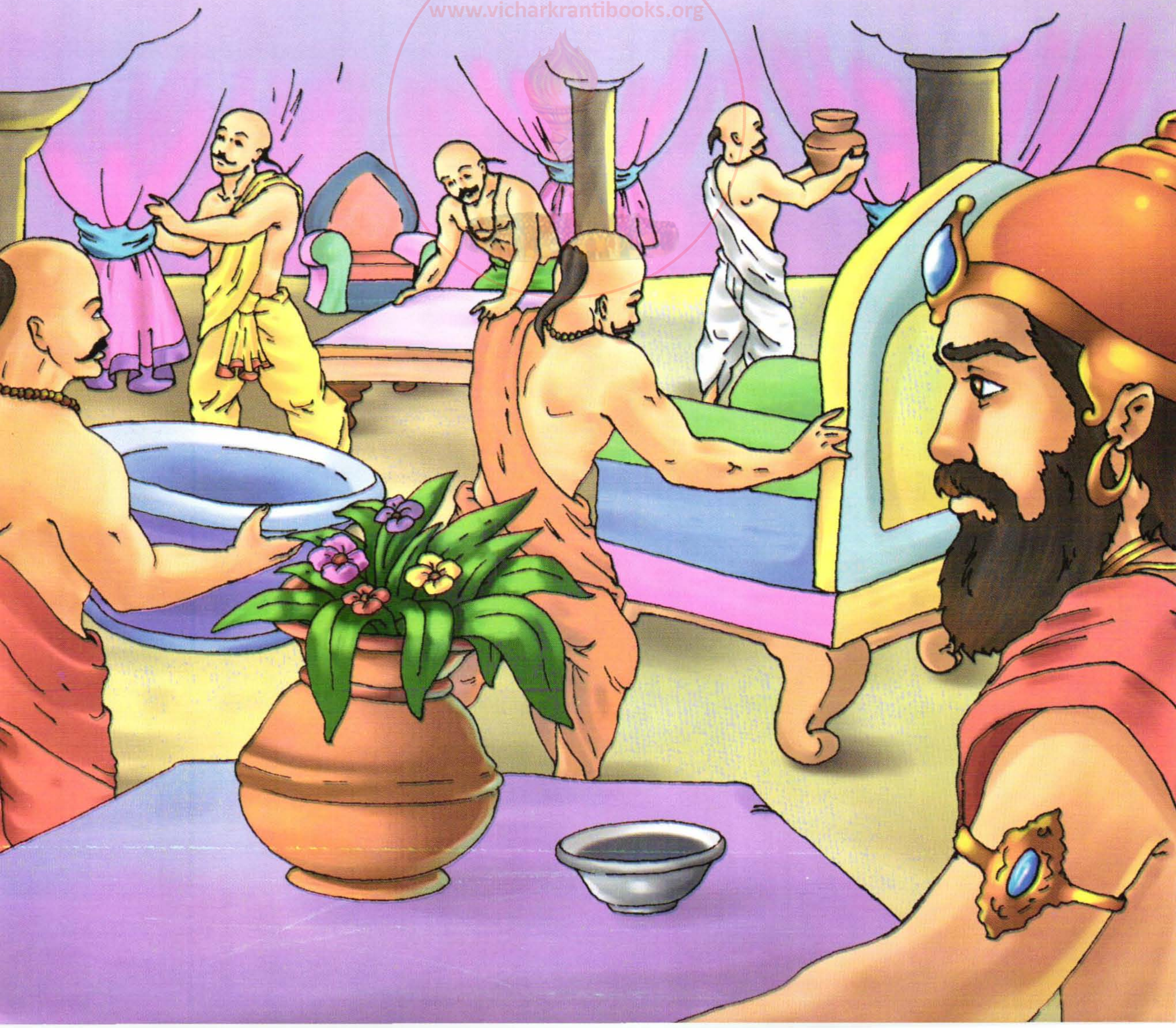

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लालबहादुर शास्त्री

स्वतंत्रता संग्राम के समय की बात है। लालबहादुर शास्त्री नहीं चाहते थे कि उनके बंदी बनाए जाने पर उनकी माता, पत्नी और परिवार के लोग रोएँ। अत: उन्होंने पहले ही अपनी माताजी को समझाया तो बोलीं—"लेकिन बेटा, मोह-ममता का भी अपना एक स्थान है। प्रियजन के कष्ट में दुखी हो जाना या रो पड़ना कोई बुरा तो नहीं!"

"आप ठीक कहती हैं, पर यदि ऐसे अवसरों पर प्रसन्नता व्यक्त की जाए तो बच्चों को आदर्श की प्रेरणा मिलेगी।" बेटे का यह युक्ति-युक्त कथन माँ को मानना व तदनुरूप आचरण करना पड़ा।

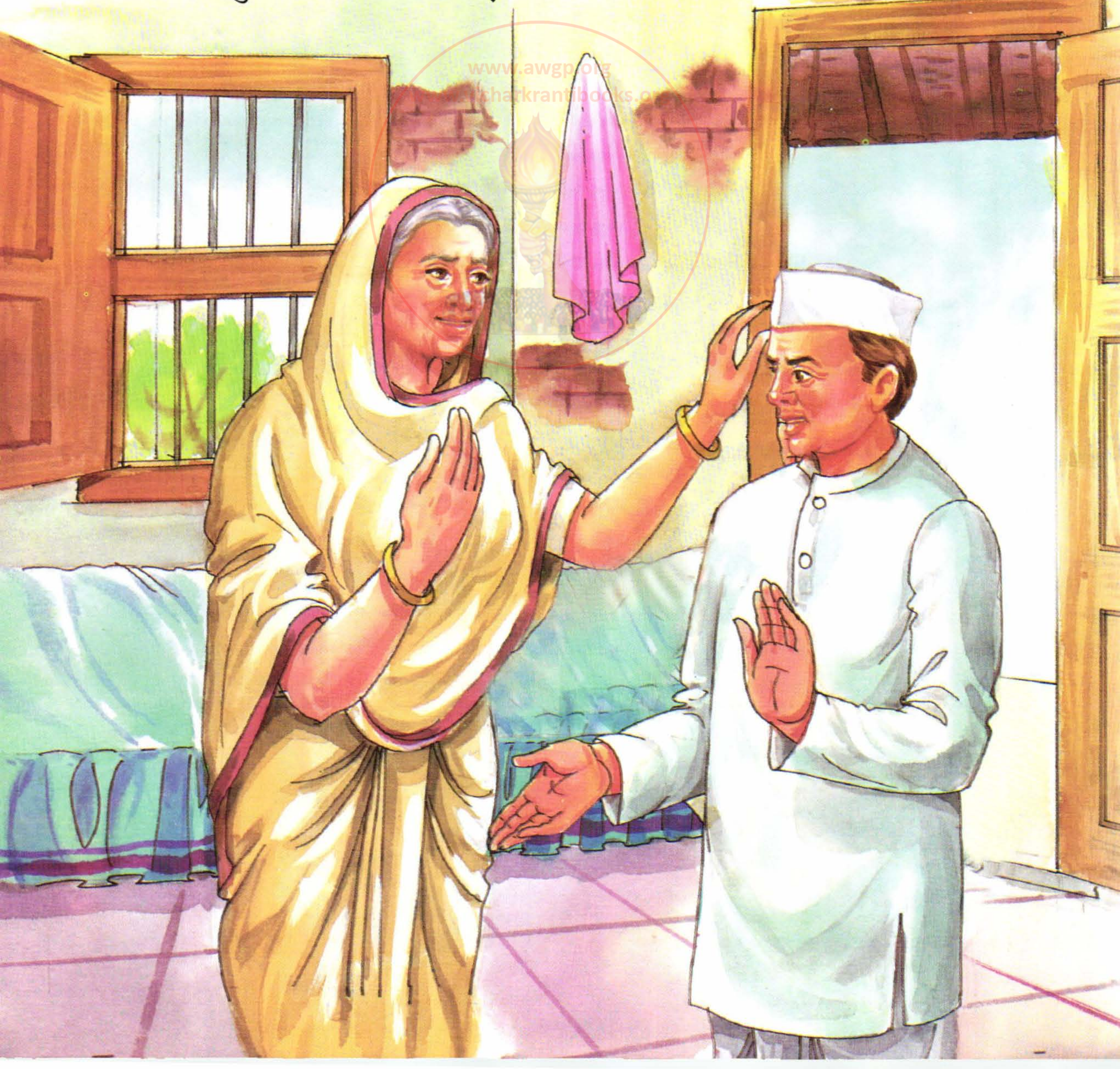

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐंड्रूज की जन सेवा

लखनऊ स्टेशन के स्टेशन मास्टर के कमरे के आगे अंगीठी जल रही थी। एक वृद्धा अत्यधिक ठंढ के कारण हाथ सेंकने जा पहुँची। स्टेशन मास्टर इसमें अपनी बेइज्जती समझकर आपे से बाहर हो गए और इतने जोर से धमकाने लगे कि भीड़ इकट्ठी हो गई। भीड़ में से एक व्यक्ति निकला और बोला—"आप तो ईसाई हैं न? बाइबिल पढ़ते या सुनते हैं न? फिर उनके संकेतों को ध्यानपूर्वक क्यों नहीं समझ पाते? यदि आप जैसे समाज के वरिष्ठ लोग भी ऐसा आचरण करेंगे, तो पारस्परिक व्यवहार के सारे मापदंड नष्ट हो जाएँगे।" भीड़ के उस व्यक्ति ने अपनी ऊनी चादर बुढ़िया को उढ़ा दी और भीड़ के साथ आगे बढ़ गया। वह यात्री था—पादरी सी० एफ० ऐंड्रूज, जो जीवन भर पीड़ित मानवता की सेवा में संलग्न रहे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुखदामणि

प्राचीनकाल में एक संत थे। वे धर्म में अत्यधिक श्रद्धा के कारण सदा प्रसन्न रहते; चेहरे से उल्लास टपकता रहता। चोरों ने समझा उनके पास कोई बड़ी दौलत है, अन्यथा हर घड़ी इतने प्रसन्न रहने का और क्या कारण हो सकता है?

अवसर पाकर चोरों ने उनका अपहरण कर लिया, जंगल में ले गए और बोले— "हमने सुना है कि आपके पास सुखदामणि है, इसी से इतने प्रसन्न रहते हैं, उसे हमारे हवाले करो, अन्यथा जान की खैर नहीं।"

संत ने एक-एक करके हर चोर को अलग-अलग बुलाया और कहा—"चोरों के डर से मैंने उसे जमीन में गाड़ दिया है। यहाँ से कुछ ही दूर पर एक स्थान है। अपनी खोपड़ी के नीचे चंद्रमा की छाया में खोदना, मिल जाएगी।"

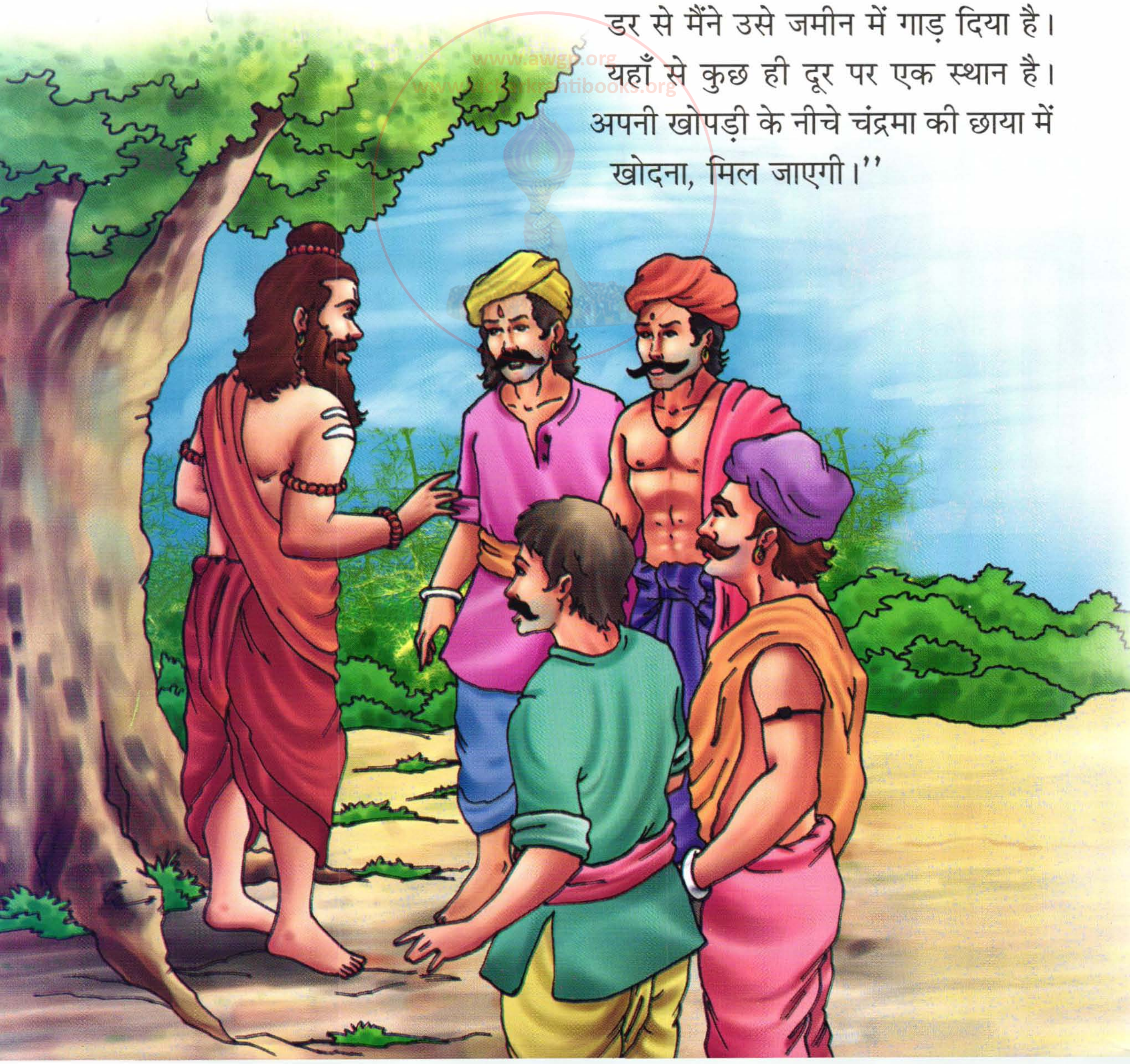

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संत पेड़ के नीचे सो गए। चोर अलग-अलग दिशा में चले और जहाँ-तहाँ खोदते फिरे। जरा सा ही खोद पाते कि छाया बदल जाती और उन्हें जहाँ-तहाँ खुदाई करनी पड़ती। रात भर में सैकड़ों छोटे-बड़े गड्ढे बन गए; पर कहीं मणि का पता न लगा। चोर हताश होकर लौट आए और संत पर गलत बात कहने का आरोप लगाकर झगड़ने लगे।

संत हँसे, बोले—"मूर्खो! मेरे कथन का अर्थ समझो। खोपड़ी तले सुखदामणि छिपी है अर्थात धार्मिक विचारों के कारण मनुष्य प्रसन्न रह सकता है। तुम भी अपना दृष्टिकोण बदलो और प्रसन्न रहना सीखो।"

सच्चा धर्म आंतरिक सद्भावों, सद्गुणों की वृद्धि करता है। यही जीवन को सफल-सार्थक बनाने वाली, आनंद से भरने वाली सुखदामणि है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

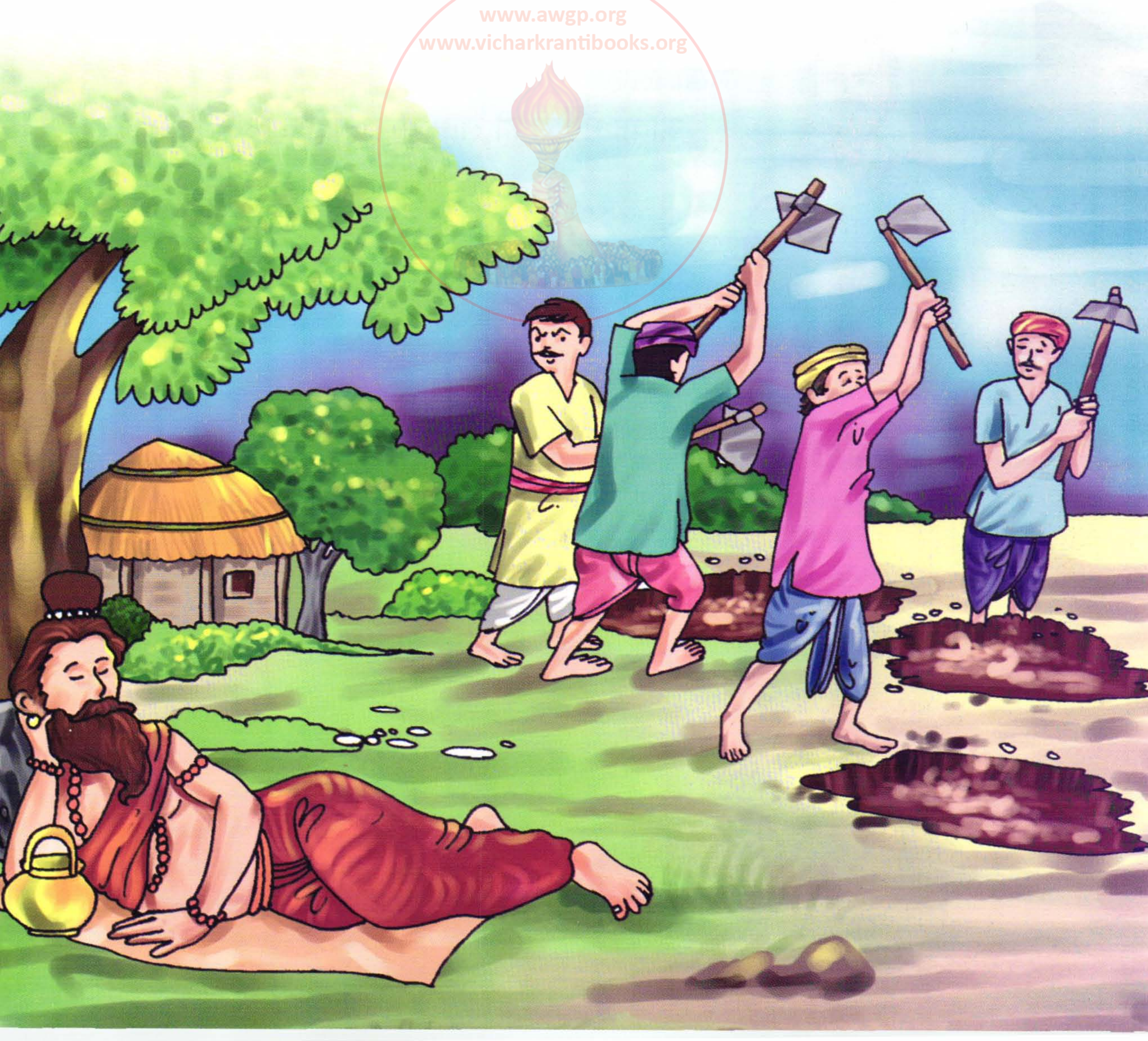

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राजेंद्र बाबू की सादगी

डॉ० राजेंद्र बाबू तब तक देशरत्न के नाम से प्रख्यात हो चुके थे। वे इलाहाबाद के 'लीडर' अखबार के संपादक श्री चिंतामणि से मिलने गए। अपना कार्ड चपरासी के हाथों अंदर चिंतामणि के पास भेजा। मामूली कपड़े देखकर चपरासी ने कहा—"बैठ जाओ। साहब व्यस्त हैं, थोड़ी देर में बुलाएँगे।" राजेंद्र बाबू चपरासियों की अँगीठी पर अपने भीगे कपड़े सुखाने लगे।

थोड़ी देर में कार्ड पर निगाह पड़ी तो श्री चिंतामणि भागते हुए स्वयं आए। ढूँढ़ा तो दिखाई ही नहीं पड़े। चपरासी ने इशारा करके बताया कि वह आदमी वही है जो अँगीठी पर कपड़े सुखा रहा है। श्री चिंतामणि देरी के लिए क्षमा माँगने लगे तो राजेंद्र बाबू ने कहा—"मुझे तो लाभ ही हुआ। मैंने अपने गीले कपड़े सुखा लिए।"

जीवन में ऐसे ही लोग सम्मान प्राप्त करते हैं।

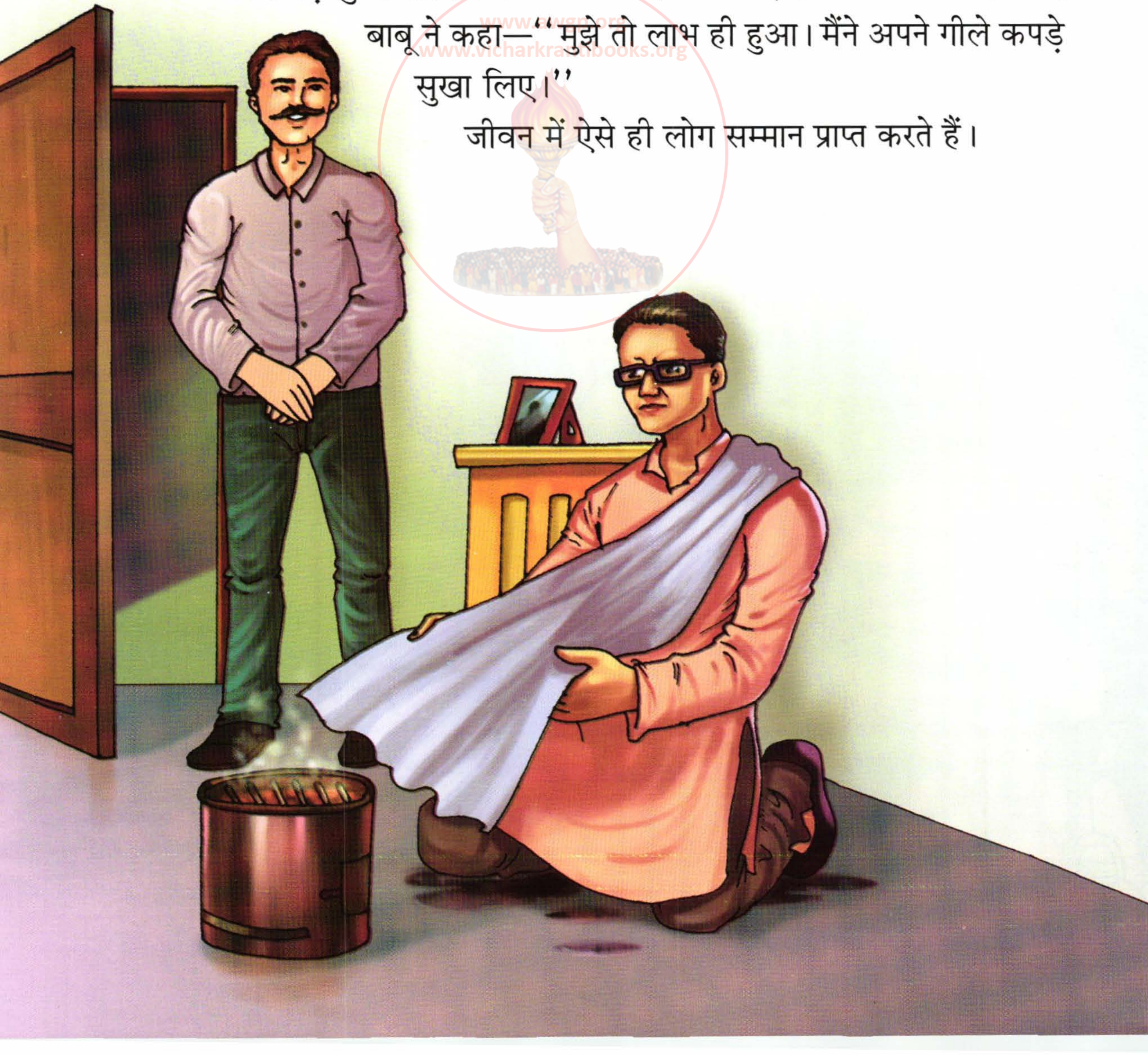

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनु और मत्स्य

एक बार मनु नाव में वेद (वेद ग्रंथ) रखे हुए जा रहे थे कि समुद्र में तूफान आ गया। तूफान शांत हुआ, तो उन्होंने देखा कि एक बड़ी मछली उनकी नाव को सहारा दिए खड़ी है। मनु ने विनीत भाव से पूछा—"भगवन्! आपने ही मेरी रक्षा की, आप कौन हैं?" मत्स्य भगवान दिव्य रूप में प्रकट होकर बोले—"वत्स! तूने ज्ञान की इन वेदों की रक्षा का व्रत लिया, इसलिए तेरी सहायता के लिए मुझे आना पड़ा।"

ब्राह्मण संस्कृति का रक्षक है। इस पर कृपा बरसाने हेतु परमसत्ता सदैव तैयार रहती है।

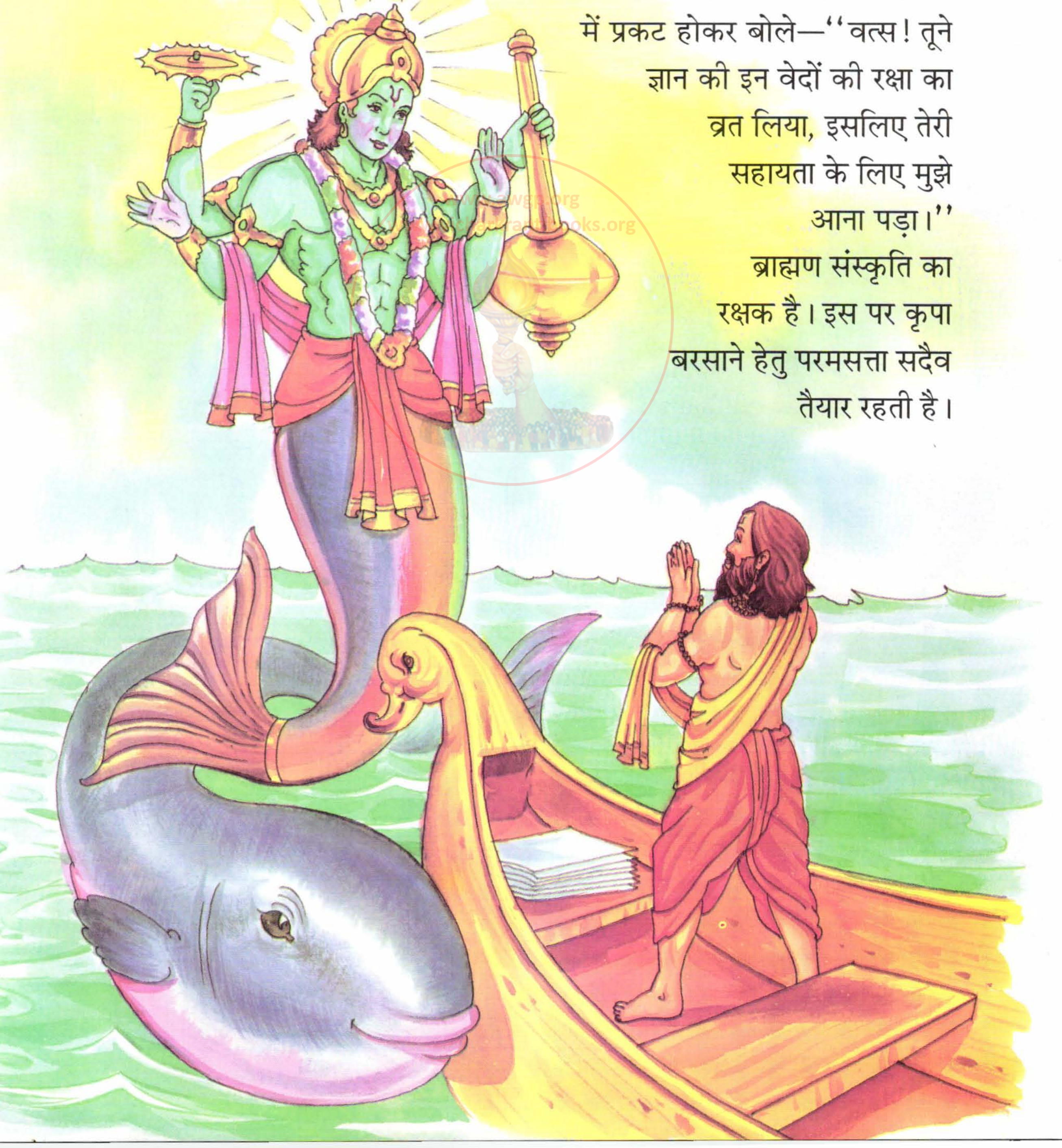

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी-अपनी समझ

किसी अरब व्यापारी को पता चला कि इथोपिया के लोगों के पास चाँदी बहुत अधिक है। उसे वहाँ जाकर व्यापार करने की सूझी और एक दिन सैकड़ों ऊँटों पर प्याज लादकर वह इथोपिया के लिए चल भी पड़ा।

इथोपियावासियों ने पहले कभी प्याज नहीं खाया था। प्याज खाकर वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने सब प्याज खरीद लिया और उसके बराबर सोना-चाँदी तौल दिया। व्यापारी बहुत प्रसन्न हुआ। धनवान बनकर देश लौटा।

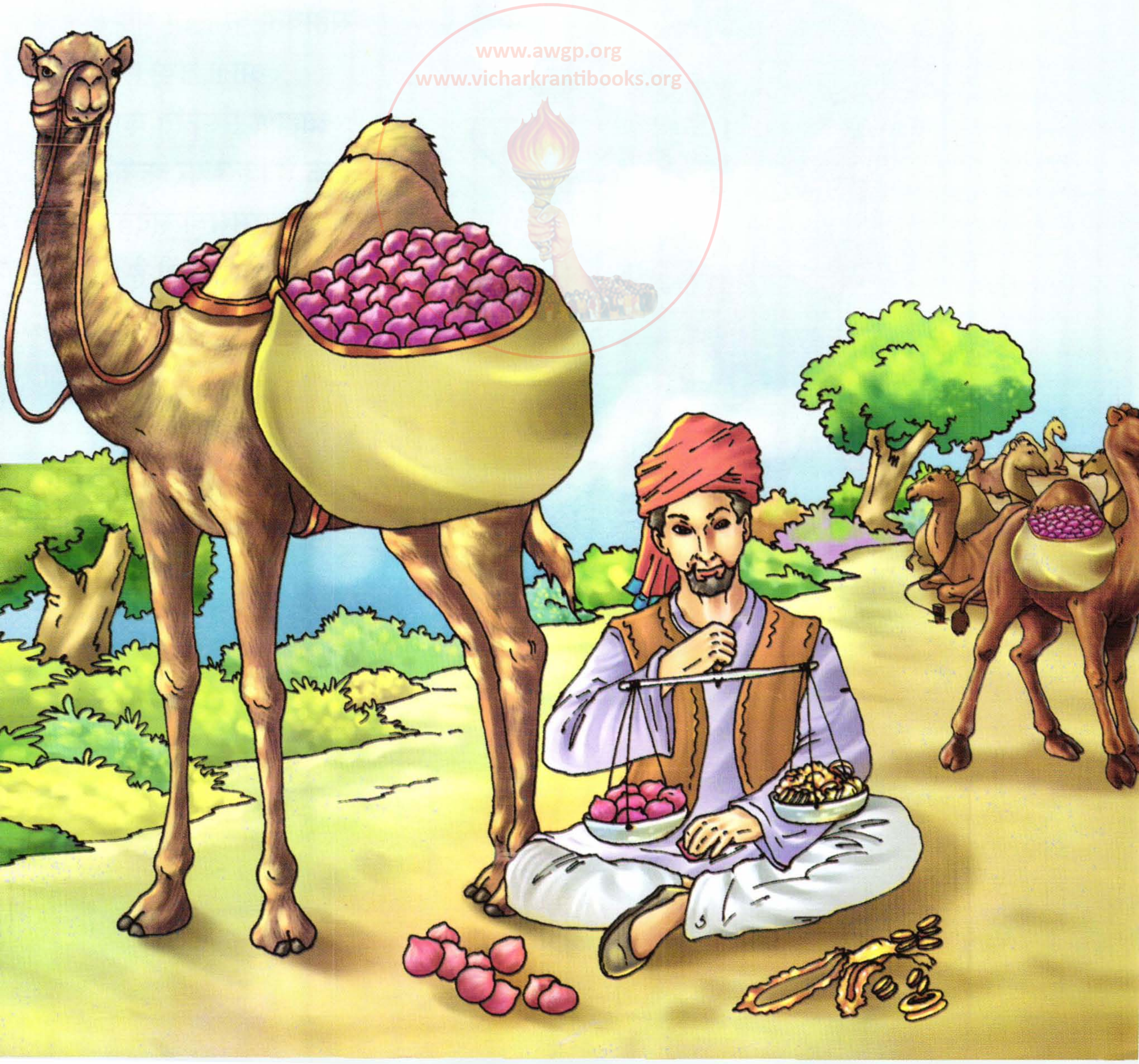

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक दूसरे व्यापारी को इसका पता चला तो उसने भी इथोपिया जाने की ठानी। उसने प्याज से भी अच्छी वस्तु लहसुन लादी और इथोपिया जा पहुँचा। वहाँ के लोगों ने लहसुन चखा तो प्रसन्नता से नाच उठे। सारा लहसुन उन्होंने ले लिया पर बदले में दें क्या, यह प्रश्न उठा। उनने देखा चाँदी तो बहुत है पर सोने से भी अच्छी वस्तु उनके पास प्याज है, इसलिए प्याज से दूसरे व्यापारी की बोरियाँ लाद दीं।

व्यापारी खीझ उठा पर बेचारा करता क्या, चुपचाप प्याज लेकर घर लौट आया। बेचारा व्यापारी समझ नहीं पा रहा था कि अमूल्य वस्तु किसे कहना चाहिए? उसे लगा यह सब अपने-अपने मन की मान्यताओं और प्रसन्नता के खेल हैं। सत्य तो कुछ और ही है, जिसे मनुष्य नहीं समझ पा रहा है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घोड़े की नासमझी

जंगल में गाय और घोड़ा घास चर रहे थे। घोड़े को ईर्ष्या हुई कि वह गाय के सीगों के डर से अच्छी घास नहीं खा पाता, तरकीब सोचने लगा कि किसी तरह उस पर काबू पाया जाए। तभी वहाँ इनसान आ निकला और उसने दोनों को ललचाई नजर से देखा। घोड़ा इनसान के पास आकर बोला—"देखते क्या हो, गाय का मीठा दूध पीकर अपनी भूख मिटाओ।" इनसान बोला—"पर वह तो मुझसे तेज दौड़ सकती है, उस पर काबू कैसे पा सकूँगा ?" घोड़ा बोला—"मेरी पीठ पर सवार हो जाओ, मैं गाय से तेज दौड़ सकता हूँ।" इनसान घोड़े की पीठ पर सवार हो गया। उसने पहले घोड़े को गुलाम बनाया और फिर गाय को काबू में किया। उसी दिन से दोनों पशु इनसान के गुलाम हैं।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

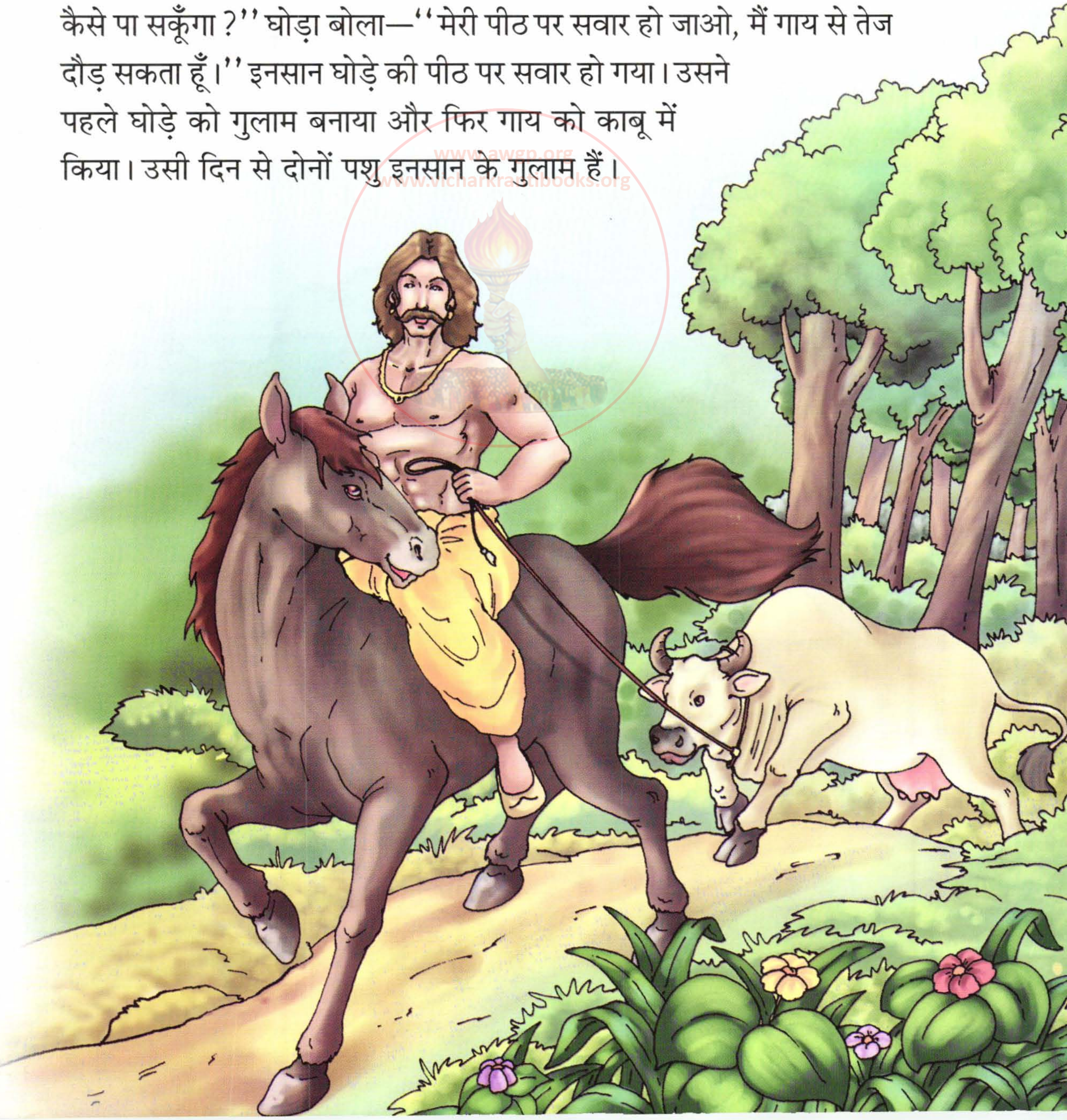

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुद्धिहीन वैज्ञानिक

एक बार चार मित्र यात्रा पर निकले। उनमें तीन बुद्धिहीन वैज्ञानिक थे और एक बुद्धिमान तो था पर वैज्ञानिक नहीं था। मार्ग में उन्हें एक मरे हुए शेर का अस्थिपंजर मिला। बुद्धिहीन वैज्ञानिकों ने सोचा कि क्यों नहीं हम इस पर अपनी विद्या की परीक्षा कर लें। तुरंत एक ने उसके अस्थिपंजर को एक जगह इकट्ठा किया, दूसरे ने उसमें चर्म, मांस और रक्त संचारित किया और तीसरा उसमें प्राण डालने ही वाला था कि चौथे बुद्धिमान ने कहा—"अरे-अरे, यह आप क्या कर रहे हैं ? आप सिंह को जीवित करने जा रहे हो। वह जीवित होते ही हम सब को खा जाएगा। पहले अपनी रक्षा का उपाय तो कर लो।" लेकिन उसकी बात किसी ने नहीं मानी।

www.vicharkrantibooks.org

लाचार, वह बुद्धिमान व्यक्ति अकेला वृक्ष पर चढ़ गया। उधर तीसरे ने जैसे ही उसमें प्राण डाले, शेर जीवित होकर उन तीनों को खा गया।

बुद्धिमान की बात मानने में सदा भलाई रहती है।

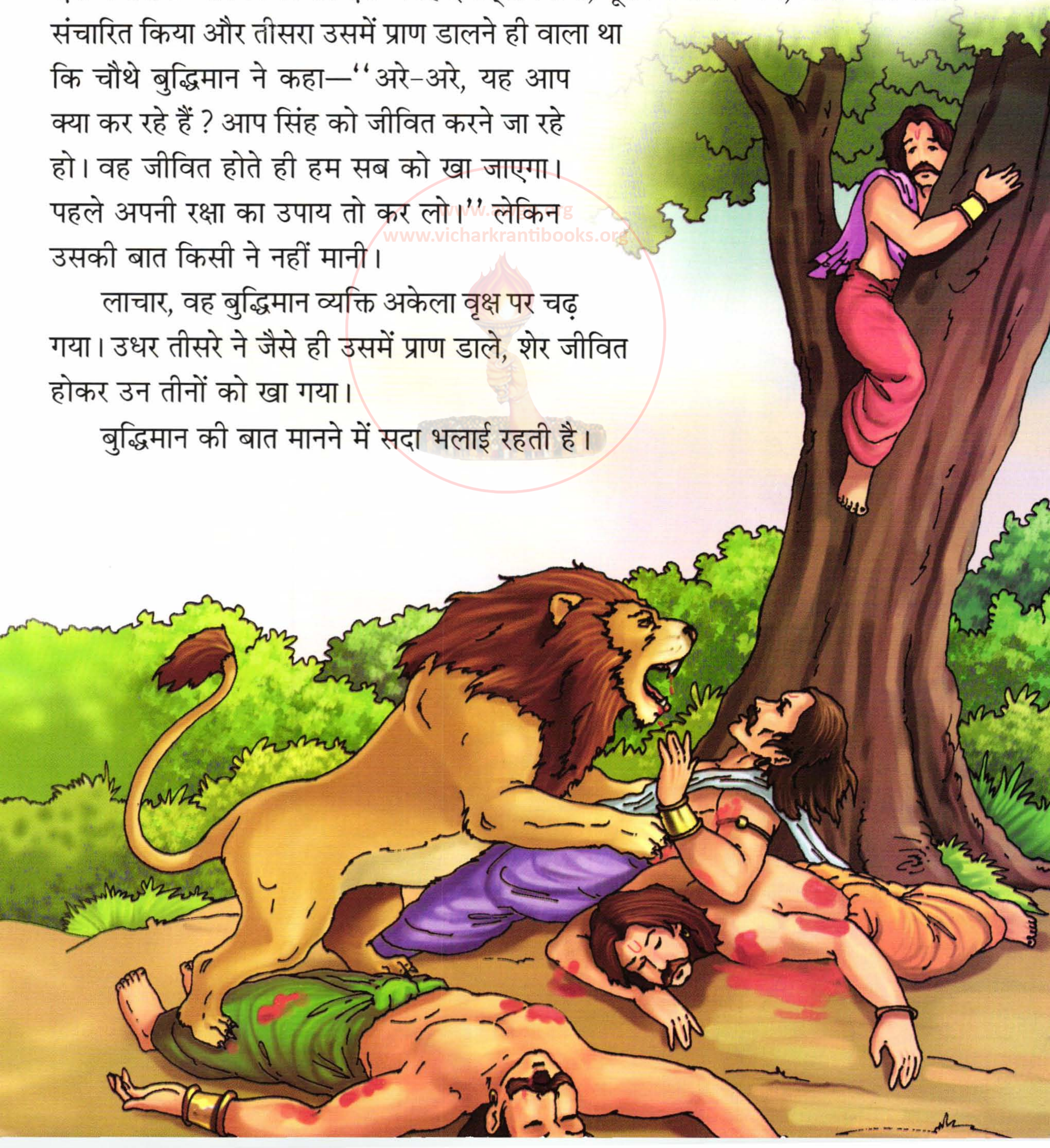

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

न्याय रक्षा

ईरान का बादशाह नौशेरवाँ एक दिन शिकार खेलते हुए दूर निकल गया। दोपहर का समय हो जाने से एक गाँव के पास डेरा डालकर भोजन की व्यवस्था की गई। अकस्मात मालूम हुआ कि नमक नहीं है। इस पर सेवक पास के घर में जाकर थोड़ा सा नमक ले आया। बादशाह ने उसे देखकर पूछा—"नमक के दाम दे आए?" उसने उत्तर दिया—"इतने से नमक का दाम क्या दिया जाए?" नौशेरवाँ ने फौरन कहा—"अब से आगे कभी ऐसा काम मत करना और इस नमक की कीमत इसी समय जाकर दे आओ। तुम नहीं समझते कि अगर बादशाह किसी के बाग से बिना दाम दिए एक फल ले ले तो उसके कर्मचारी बाग को ही उजाड़कर खा जाएँगे।" नौशेरवाँ की इसी न्यायशीलता के कारण ही उसका शासन बहुत दिनों

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तक चला। आज भी शासकों के लिए उसका आचरण आदर्शस्वरूप माना जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विद्वान इब्नेसिना

अब से एक हजार वर्ष पूर्व बुखारी के सुलतान अब्दुल मंजूर किसी ऐसी बीमारी से ग्रसित हो गए, जिसे चिकित्सकों ने असाध्य घोषित कर दिया था। सुयोग्य चिकित्सक के पुत्र इब्नेसिना ने उनका इलाज किया और अच्छा कर दिया। सुलतान ने मुँह माँगा इनाम माँगने के लिए कहा, तो उनने उनके पुस्तकालय में खुला प्रवेश पाने और नोट करने भर की इजाजत माँग ली। उनका ज्ञान भंडार अथाह होता चला गया। पिता के मरने पर उन्हें परिवार निर्वाह के लिए वापस लौटना पड़ा। सुलतान ने उन्हें स्कूलों का इंस्पेक्टर बना दिया। उन्होंने जुरआन के राजकुमार का भी इलाज किया और परिवार के गुजारे के लायक पेंशन पाई। वे निश्चिंत होकर दूर-दूर तक के पुस्तकालयों में प्रवेश पाकर अध्ययन करते रहे। इब्नेसिना ने तिब्बती चिकित्सा और दर्शनशास्त्र पर अनेक ग्रंथ लिखे हैं, जिन्हें विद्वानों में मान्यता प्राप्त है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किराया चुकाया

स्वर्गीय पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्त्ताओं के साथ बंबई से नागपुर तक तीसरे दर्जे में रेल द्वारा यात्रा पर जा रहे थे। उन दिनों वे भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष थे। उसी ट्रेन के प्रथम श्रेणी के डिब्बे में गुरु मा० स० गोलवलकर भी जा रहे थे। उन्होंने किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर विचार-विमर्श करने हेतु उपाध्याय जी को अपने पास बुलाया।

दो स्टेशन तक उनका प्रथम श्रेणी के डिब्बे में ही वार्त्तालाप होता रहा। अपने डिब्बे में आने पर वे टी० टी० ई० को खोजने का प्रयास करने लगे। हर स्टेशन पर नीचे उतरते और टी० टी० ई० को खोजते। तीसरे दर्जे का टिकट रखते हुए दो स्टेशन तक प्रथम श्रेणी में यात्रा करना किसी व्यक्ति को कोई असामान्य बात नहीं लगती किंतु जो निरंतर आत्मनिरीक्षण करता चलता है, उसके लिए यह सामान्य नहीं, असामान्य बात हो जाती है। एक तो राष्ट्रीय संपदा का उपयोग बिना मूल्य चुकाए करना तथा दूसरा अपने अंतःकरण

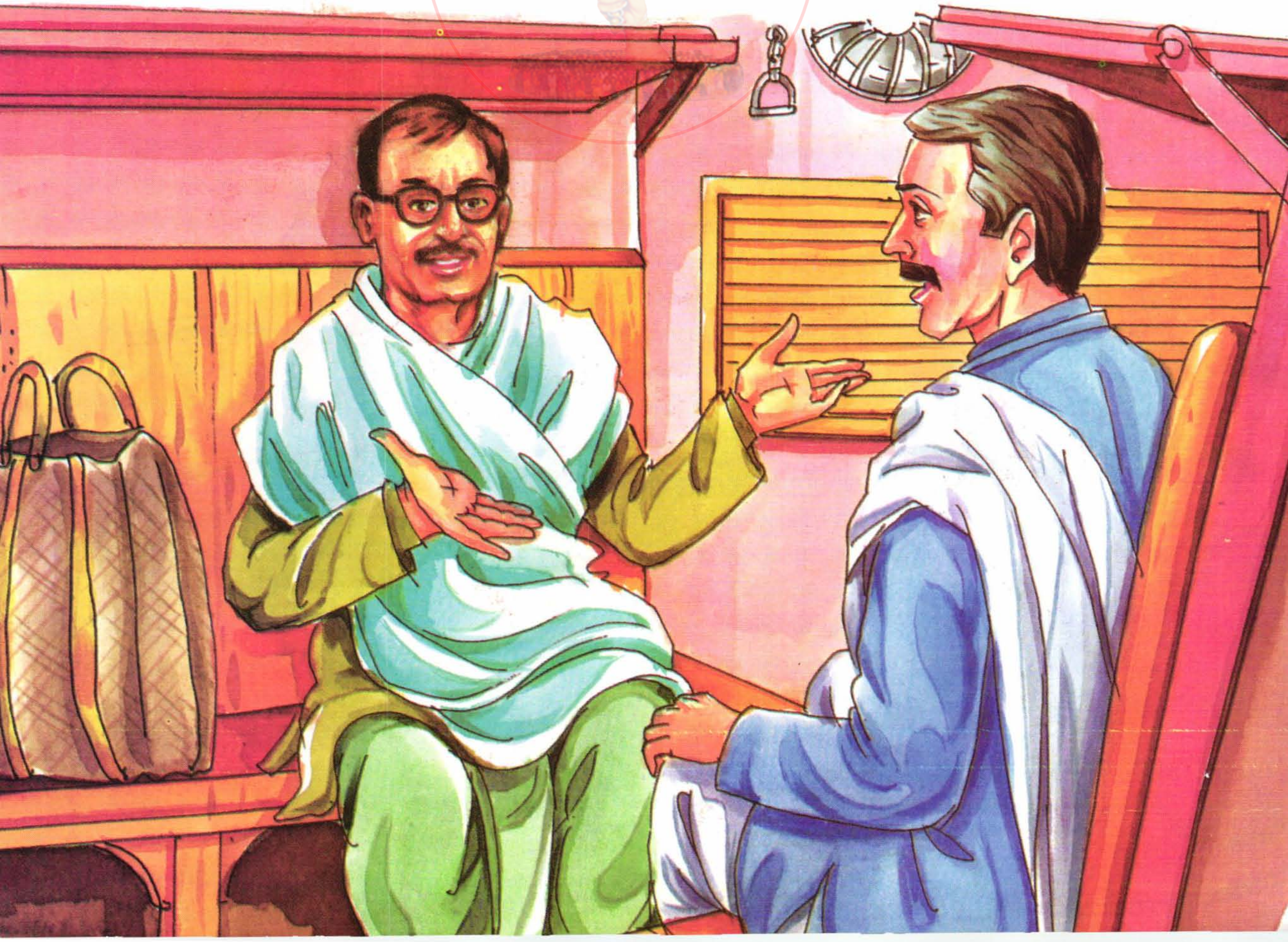

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को झुठलाना। श्री उपाध्याय को टी० टी० ई० की खोज करते देख उनके साथी यह जानने को उत्सुक थे कि आखिर उनको टी० टी० ई० से ऐसा कौन सा आवश्यक कार्य है जो हर स्टेशन पर उतरकर दौड़-धूप करते हैं।

किंतु पंडित जी की दौड़-धूप का प्रयास सफल हुआ। उन्हें शीघ्र ही सामने से टी० टी० ई० आता दिखाई दिया। जब उन्होंने अपना अधिक किराया जमा करने को कहा तो वह विस्मय भरी दृष्टि से उनकी ओर देखने लगा। एक साधारण सा दीखने वाला व्यक्ति प्रथम श्रेणी में यात्रा करे और वह भी स्वयं आकर किराया जमा कराए। किंतु दूसरे ही क्षण वह कुछ नहीं बोला और चुपचाप हिसाब लगाकर पैसे ले लिए।

पैसे लेने के साथ ही पूछ बैठा—"क्या आप रसीद भी चाहते हैं?" पंडित जी ने तत्काल ही उत्तर दिया—"अवश्यमेव।"

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

टी० टी० ई० उस राशि को रिश्वत रूप में अपने ही पास रखना चाहता था किंतु उपाध्याय जी ने कहा—"मेरे टिकट के पैसे न देने और टी० टी० ई० के जेब में रख लेने से दोनों अपराध समान हैं। दोनों से ही देश खोखला होता है।"

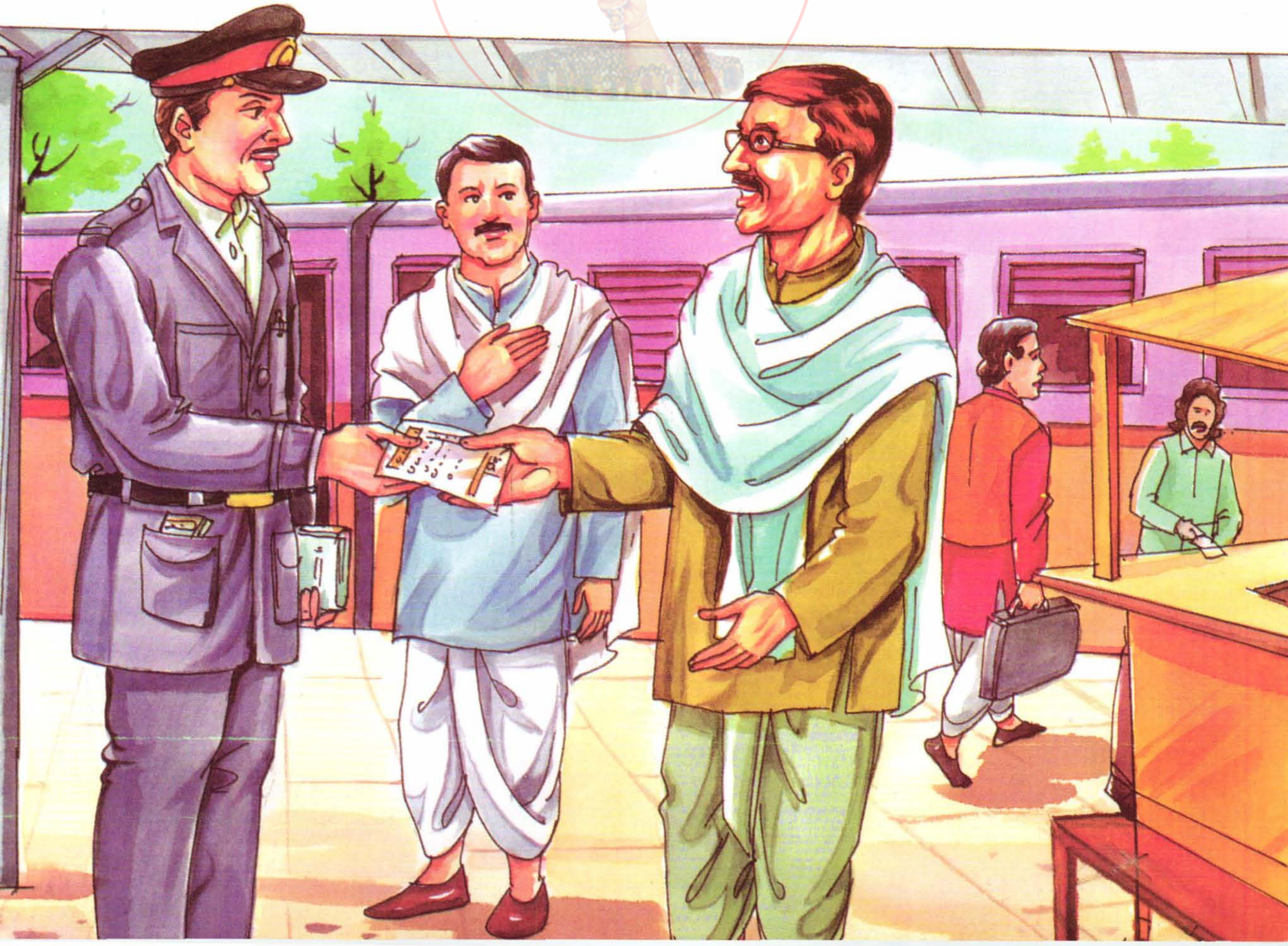

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य की पहचान चरित्र से

स्वामी विवेकानंद एक बार अमेरिका की एक सड़क से गुजर रहे थे। स्वामी जी गेरुए वस्त्र धारण किए हुए थे। उनकी विचित्र वेशभूषा देखकर लोगों ने समझा, यह कोई मूर्ख है। उनके पीछे हँसी-मजाक करती हुई काफी भीड़ चल पड़ी। स्वामी जी थोड़ा चलकर रुके और भीड़ की ओर देखते हुए बोले—"सज्जनो! आपके देश में सभ्यता की कसौटी पोशाक है, पर मैं जिस देश से आया हूँ, वहाँ कपड़ों से नहीं मनुष्य की पहचान उसके चरित्र से होती है।" स्वामी जी के तेजस्वी वचन सुनकर सारी भीड़ स्तब्ध रह गई। स्वामी जी सहज भाव से आगे बढ़ गए।

व्यक्ति की परख उसके बाह्य रूप से तथा वेशभूषा से नहीं, अंत: की श्रेष्ठता से की जाती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नेपोलियन की समझदारी

नेपोलियन बोनापार्ट ने अपने एक विरोधी को उच्च पद पर नियुक्त किया तो अधिकारियों ने कहा कि यह व्यक्ति आपके बारे में अच्छे विचार नहीं रखता।

नेपोलियन ने हँसते हुए कहा—''जिस पद के लिए मैंने उसे नियुक्त किया है उसके लिए वह पूर्णतया योग्य है। मेरे बारे में वह व्यक्ति ठीक विचार नहीं रखता, इस उत्तेजना में मैं राष्ट्र के लिए उपयोगी व्यक्ति की उपेक्षा करके, राष्ट्र के साथ और स्वयं अपने व्यक्तित्व के साथ अन्याय कर बैठूँगा।''

राष्ट्रहित में स्वयं के हित को भूलना ही व्यक्तित्व को ऊँचा और महान बनाना है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चुहिया ने चुना चूहा

एक सिद्धपुरुष नदी में स्नान कर रहे थे। एक चुहिया पानी में बहती दिखाई दी तो उन्होंने उसे पानी से बाहर निकाल लिया। कुटिया में ले आए और वह वहीं पलकर बड़ी होने लगी।

चुहिया सिद्धपुरुष की करामातें देखती रही, सो उसके मन में भी कुछ वरदान पाने की इच्छा हुई। एक दिन अवसर पाकर बोली—"मैं बड़ी हो गई हूँ, किसी वर से मेरा विवाह करा दीजिए।" संत ने उसे खिड़की में से झाँकते सूरज को दिखाया और कहा—"इससे करा दें?" चुहिया ने कहा—"यह तो आग का गोला है। मुझे तो ठंढे स्वभाव का चाहिए।" संत ने बादल की बात कही—"वह ठंढा भी है, सूरज से बड़ा भी। वह आता है, तो सूरज को अंचल में छिपा लेता है।"

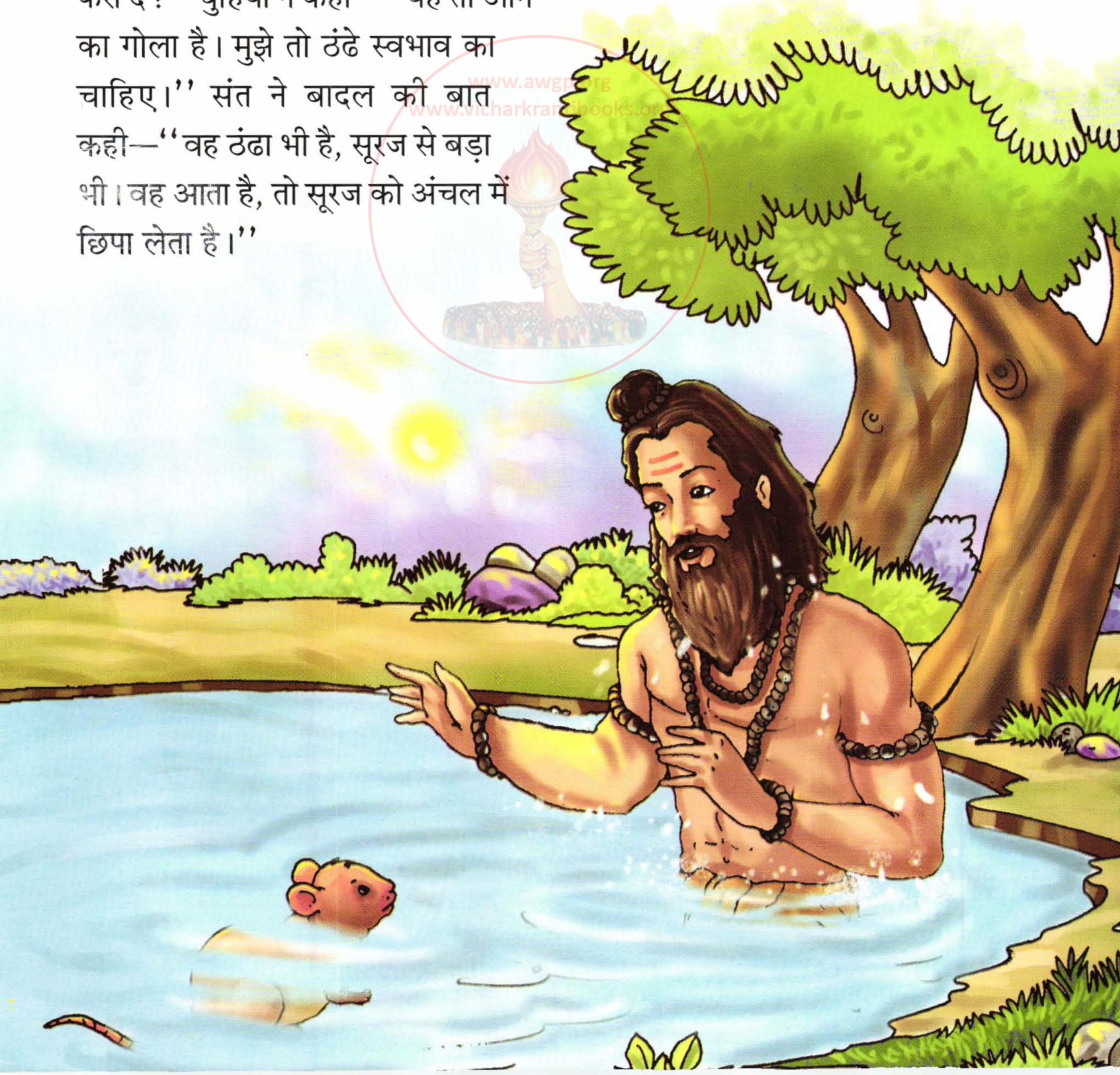

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चुहिया को यह प्रस्ताव भी रुचा नहीं। वह इससे बड़ा दूल्हा चाहती थी। संत ने पवन को बादल से बड़ा बताया, जो देखते-देखते उसे उड़ा ले जाता है। उससे बड़ा पर्वत बताया, जो हवा को रोककर खड़ा हो जाता है। जब चुहिया ने इन दोनों को भी अस्वीकार कर दिया, तो सिद्ध पुरुष ने पूरे जोश-खरोश के साथ पहाड़ में बिल बनाने का प्रयास करते चूहे को दिखाया। चुहिया ने उसे पसंद कर लिया, कहा—"चूहा पर्वत से भी श्रेष्ठ है; वह बिल बनाकर पर्वतों की जड़ खोखली करने और उसे इधर से उधर लुढ़का देने में समर्थ रहता है।" एक मोटा चूहा बुलाकर संत ने चुहिया की शादी रचा दी।

मनुष्य को भी इसी तरह अच्छे से अच्छे अवसर दिए जाते हैं, पर वह अपनी मन:स्थिति के अनुरूप ही चुनाव करता है।

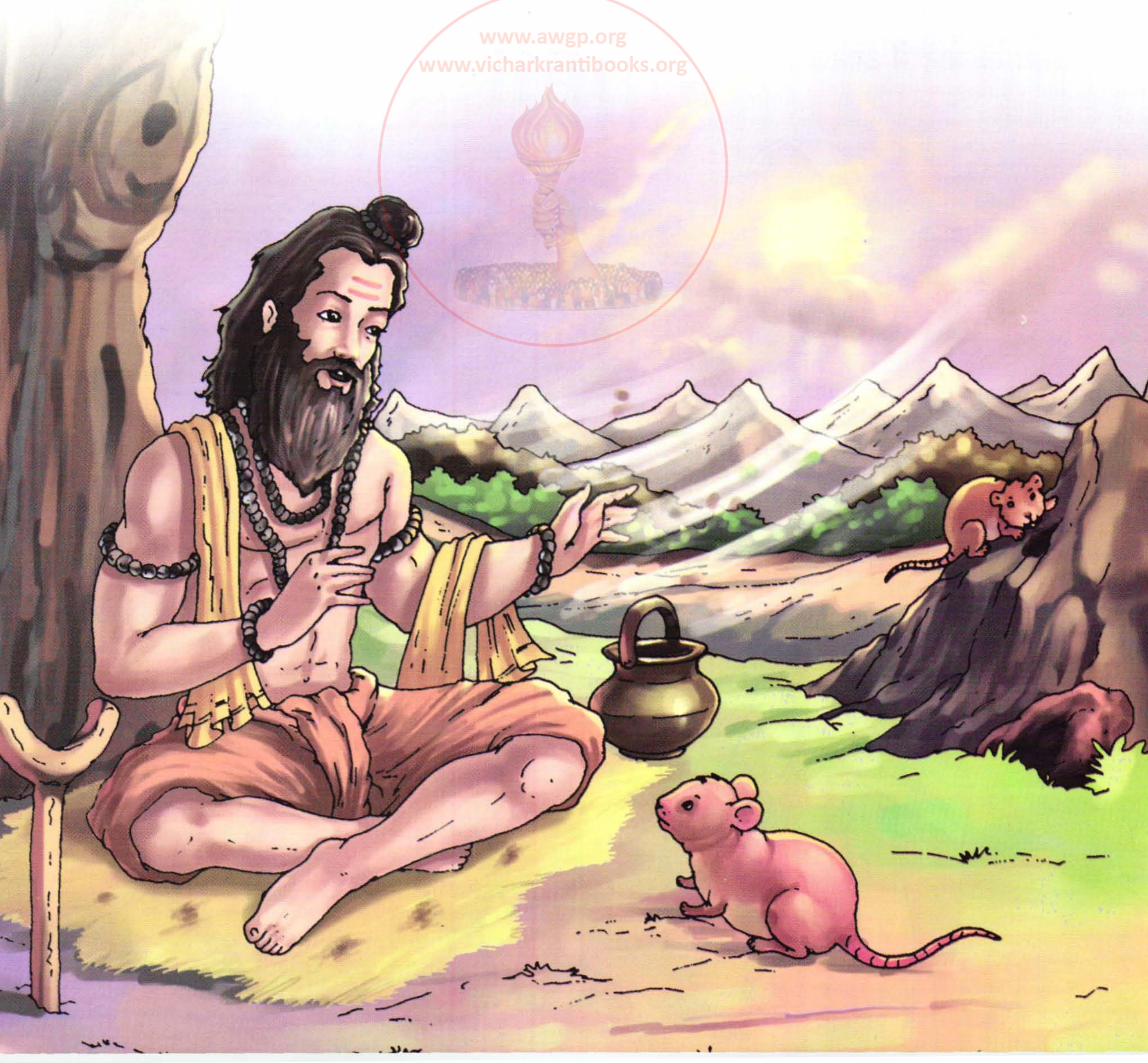

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विनोबा भावे

विनोबा भावे प्रतिदिन आश्रम से तीन मील दूर स्थित सुरगाँव एक फावड़ा कंधे पर रखकर जाते थे।

एक बार कमलनयन बजाज ने उनसे पूछा—"आप फावड़ा रोज इतनी दूर अपने साथ क्यों ले जाते हैं ? उस गाँव में ही किसी के यहाँ आप फावड़ा क्यों नहीं छोड़ आते ?"

विनोबा जी बोले—"जिस काम के लिए मैं जाता हूँ उसका औजार भी मेरे साथ ही होना चाहिए। फौज का सिपाही अपनी बंदूक या अन्य हथियार लेकर चलता है, उसी प्रकार एक 'सफैया' को भी अपना औजार सदा अपने साथ लेकर ही चलना चाहिए। सिपाही को अपने हथियारों से मोह हो जाता है। उसी तरह हमें भी अपने औजारों को अपने साथ ले जाने में आनंद और गौरव का अनुभव होना चाहिए।"

www.awgp.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरु से लड़ पड़े

परशुराम उन दिनों शिवजी से शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। भगवान शिष्यों में से ऐसे प्रतिभाशाली छात्र की तलाश कर रहे थे, जो न्याय और औचित्य के प्रति अटूट निष्ठावान हो, साथ ही निर्भय और पराक्रमी भी।

सच्चा शिष्य ढूँढ़ने के लिए भगवान शिव ने कुछ अनुचित आचरण आरंभ किए और बारीकी से देखा, शिष्यों में से किसकी क्या प्रतिक्रिया होती है ?

कई चले गए, कुछ सहन कर गए, परंतु मात्र परशुराम ही एक ऐसे थे, जिन्होंने विरोध किया। एक दिन बात बढ़ते-बढ़ते यहाँ तक पहुँची कि परशुराम तनकर खड़े हो गए और न मानने पर शिवजी का सिर फोड़ देने को तत्पर हो गए। भगवान को विश्वास हो गया कि यही है, जो फैली अनीति को दूर कर सकेगा। उन्होंने प्रसन्न होकर परशुराम को दिव्य परशु प्रदान किया और सहस्रबाहु से लेकर धरातल के समस्त आततायियों से निपट लेने का आदेश दिया।

शिवजी के सहस्र नामों में से एक नाम 'खंड परशु' भी इसीलिए पड़ा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुष्टता पर सज्जनता का प्रहार

एक मनुष्य को किसी संत के दुर्व्यवहार पर क्रोध आ गया। बदले में संत को भी क्रोध आ गया और वे भी उससे उसी प्रकार का व्यवहार करने पर उतारू हो गए।

एक सिद्धपुरुष यह सब देख रहे थे। बोले—"कीचड़ को कीचड़ से नहीं, स्वच्छ जल से धोओ। आग पर पानी डालो। दुष्टता पर सज्जनता का प्रहार करो। बदले की अपेक्षा यह उपचार अधिक कारगर है।"

क्रोध को शांति से जीता जा सकता है।

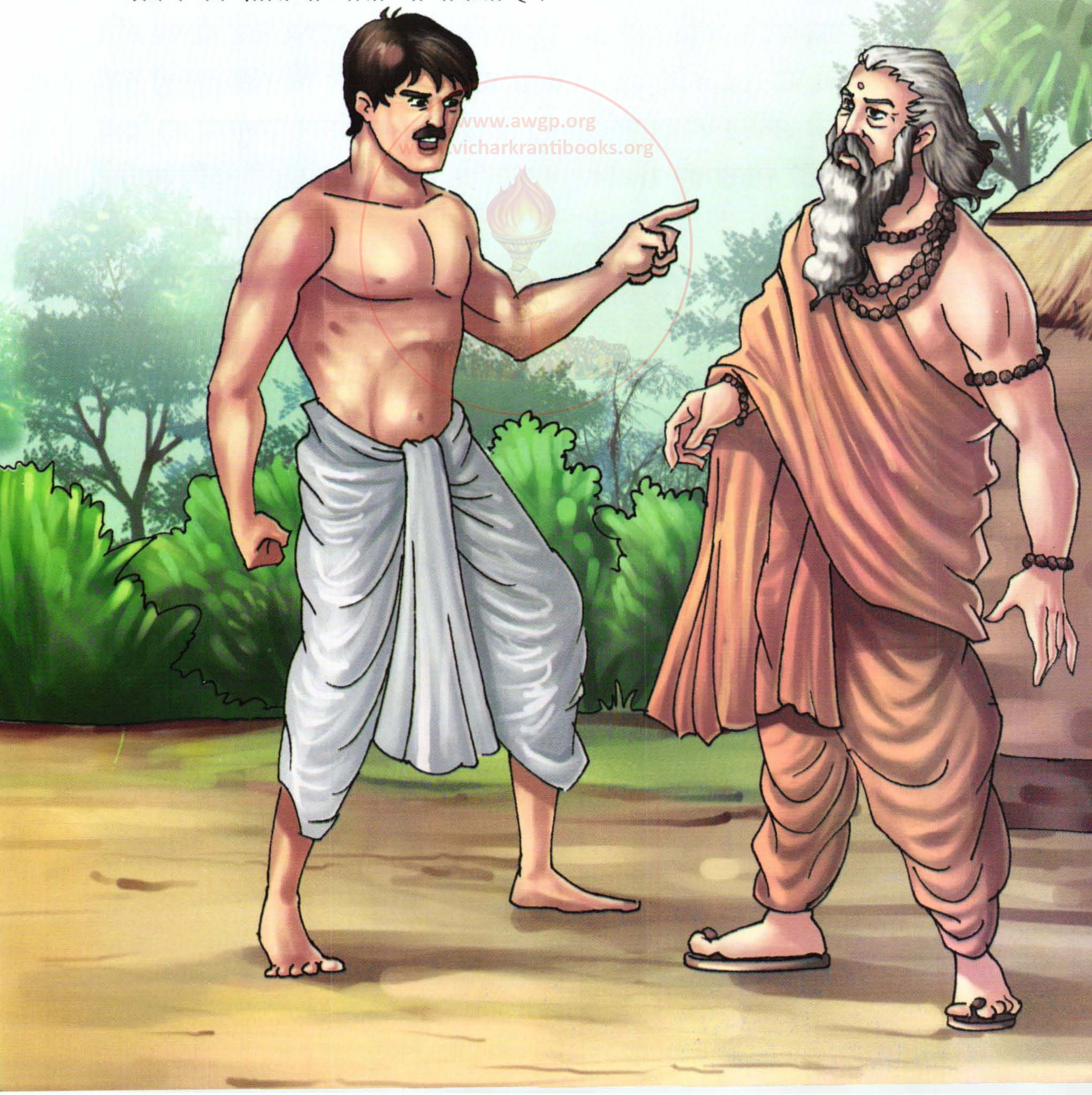

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विद्या सबसे बड़ी संपदा

भरद्वाज मुनि जीवन भर तपस्या में निरत रहे। मरते समय देवदूत लेने आए तो उन्होंने अनुरोध किया— "मुझे इसी लोक में जन्मने दिया जाए। स्वर्ग जाकर क्या करूँगा?" देवदूतों ने आश्चर्य से पूछा—"तप का लक्ष्य स्वर्ग होता है, सो आपको मिल चुका। तब तप किसलिए?" भरद्वाज जी ने कहा—"ज्ञान संचय के लिए। पूर्ण सत्य तक पहुँचने के लिए अभी विद्या की संपदा मेरे पास नहीं के बराबर है। उसके लिए अभी मैं और भी अनेक जन्म तप करना चाहता हूँ। स्वर्ग से ज्ञान बड़ा है। स्वर्ग से केवल मिलती है सुविधा और ज्ञान से आनंद जो मिलता है।"

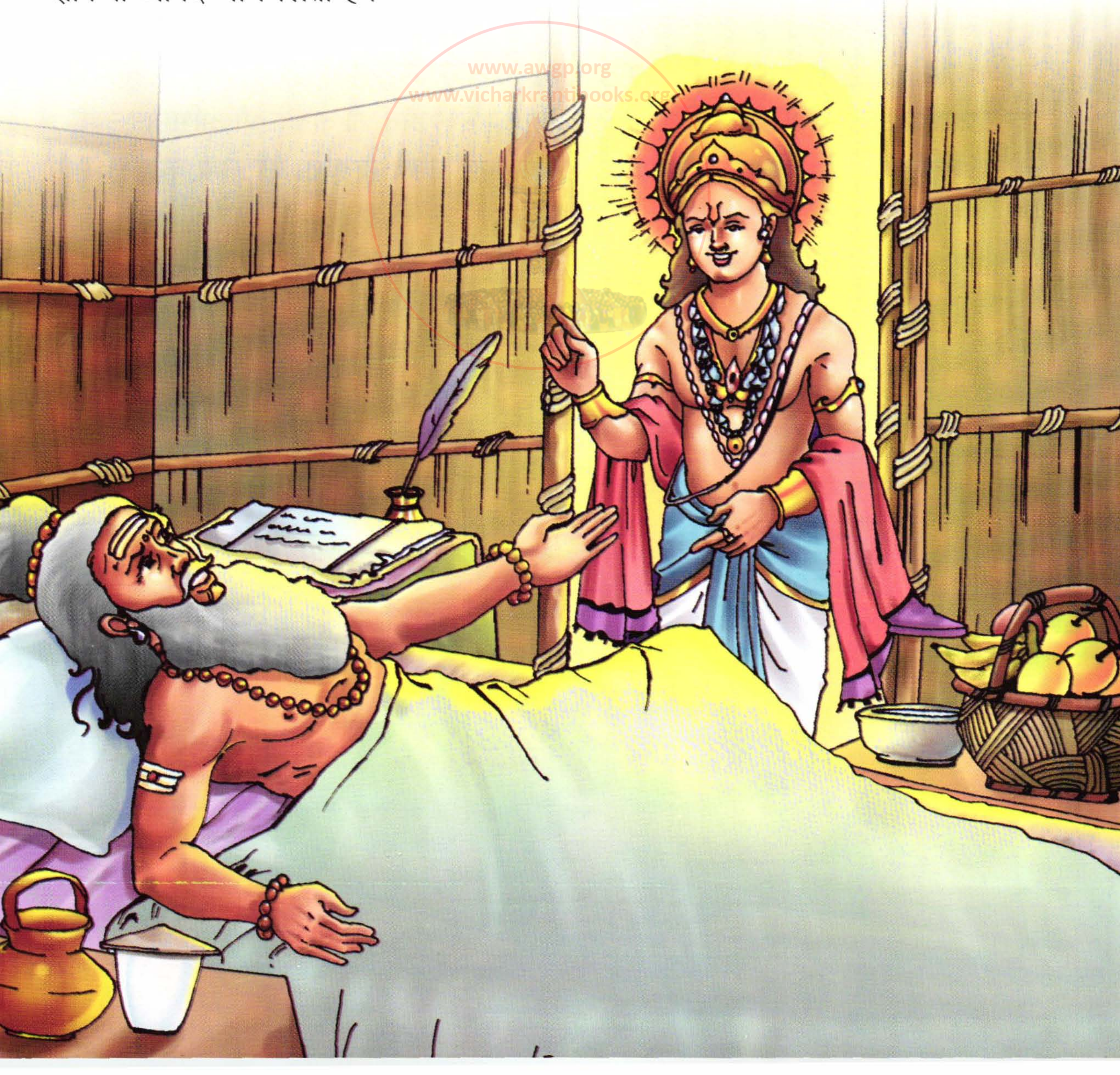

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संत का लक्षण

एक संत के त्याग, तप और विद्या की राजा ने बड़ी प्रशंसा सुनी तो उसे राजमहल में आने के लिए निमंत्रण भेजा। जब उसने आना स्वीकार कर लिया तो राजा ने स्वागत-सत्कार की भारी तैयारी की। रास्ते में मूल्यवान कालीन बिछवा दिए। संत आए तो उनके पैर कीचड़ में सने थे और उन्हीं से वे कालीन को गंदा करते हुए चले आए। मंत्री ने इसका कारण संत से पूछा तो संत ने कहा—"गर्व मुझे बुरा लगता है। राजा के इस प्रदर्शन को गंदा करने के लिए मैंने कीचड़ में पैर साने हैं और इन कालीनों का घमंड चूर कर रहा हूँ।"

राजा ने विनम्र होकर पूछा—"भगवन्! घमंड से घमंड कैसे चूर होगा?"

संत कुछ न बोल सके और उनने अपनी गलती सुधारने के लिए वापस लौट चलना ही उचित समझा। महान बनने के लिए अहंकार छोड़ना पड़ता है। सच्चा संत अहंकार से कोसों दूर रहता है। उसे अपनी योग साधना, सिद्धि और धार्मिक होने का तनिक भी अभिमान नहीं होता। वह इनका प्रदर्शन भी नहीं करता। वह केवल पीड़ित मानवता की सेवा करता है।

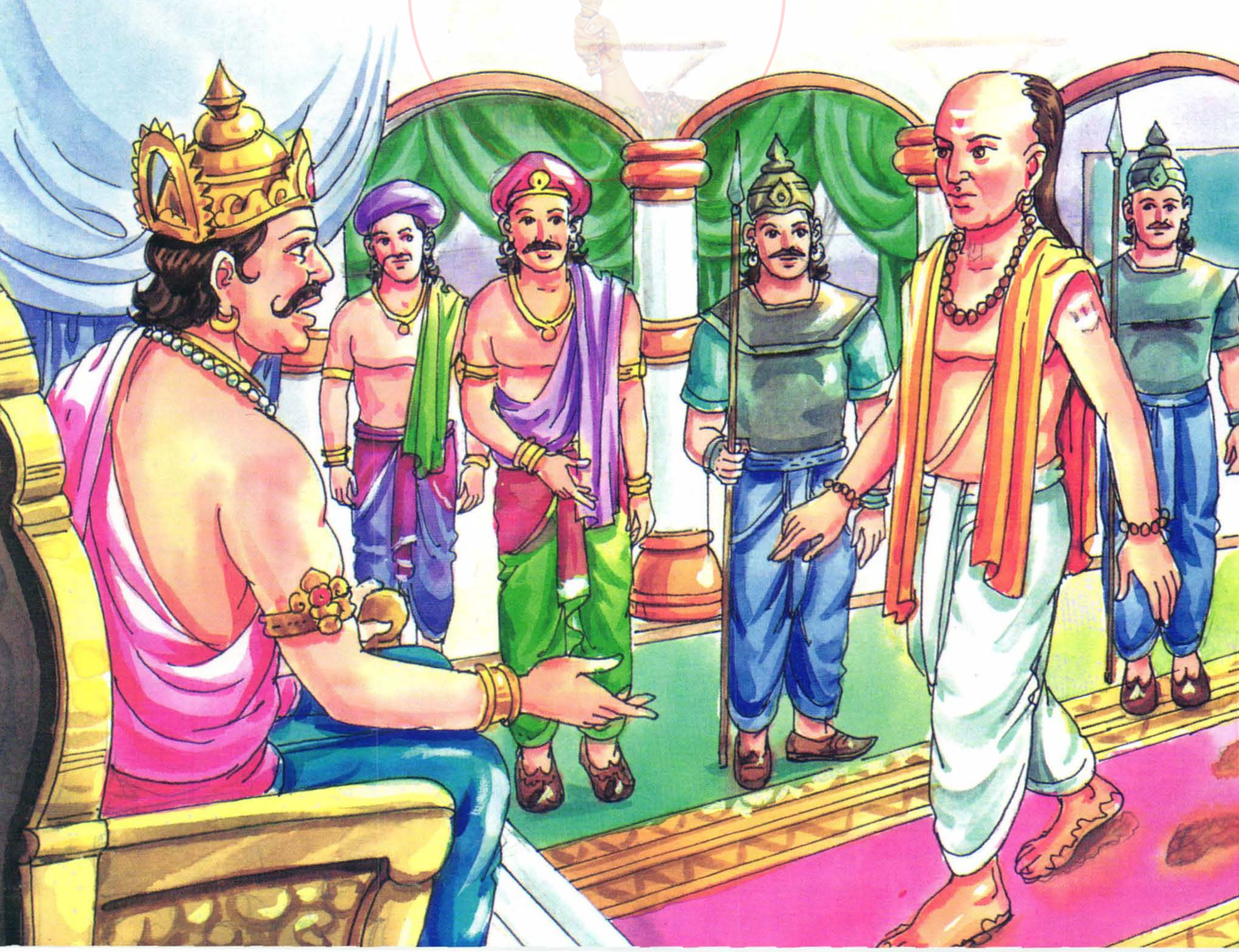

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुस्तक ही खुराक

महापुरुषों की यही विशेषता रही है कि वे स्वयं आजीवन स्वाध्यायशील रहे हैं। आचार्य अत्रे उन दिनों बीमार पड़े थे। फिर भी चारपाई पर सिरहाने, बगल में उनने ढेरों पुस्तकें जमा कर रखी थीं। उस कष्टकर मनःस्थिति में पढ़कर मन को हलका करते थे। एक मित्र मिलने आए और उन्होंने पूर्ण विश्राम की बात कहते हुए पढ़ने से बचने का परामर्श दिया। अत्रे जी ने मुस्कराते हुए कहा—"मैं बीमारी की खुराक बना हुआ हूँ, पर मैं भूखा कैसे रहूँ? अपनी खुराक पुस्तकों से हासिल करता हूँ।"

इसी प्रकार सभी की अभिरुचि यदि ज्ञानार्जन-स्वाध्याय के प्रति जाग उठे, तो उनका व्यक्तित्व भी अपूर्ण न रहे। जो इसमें पिछड़ जाते हैं, वे पछताते हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

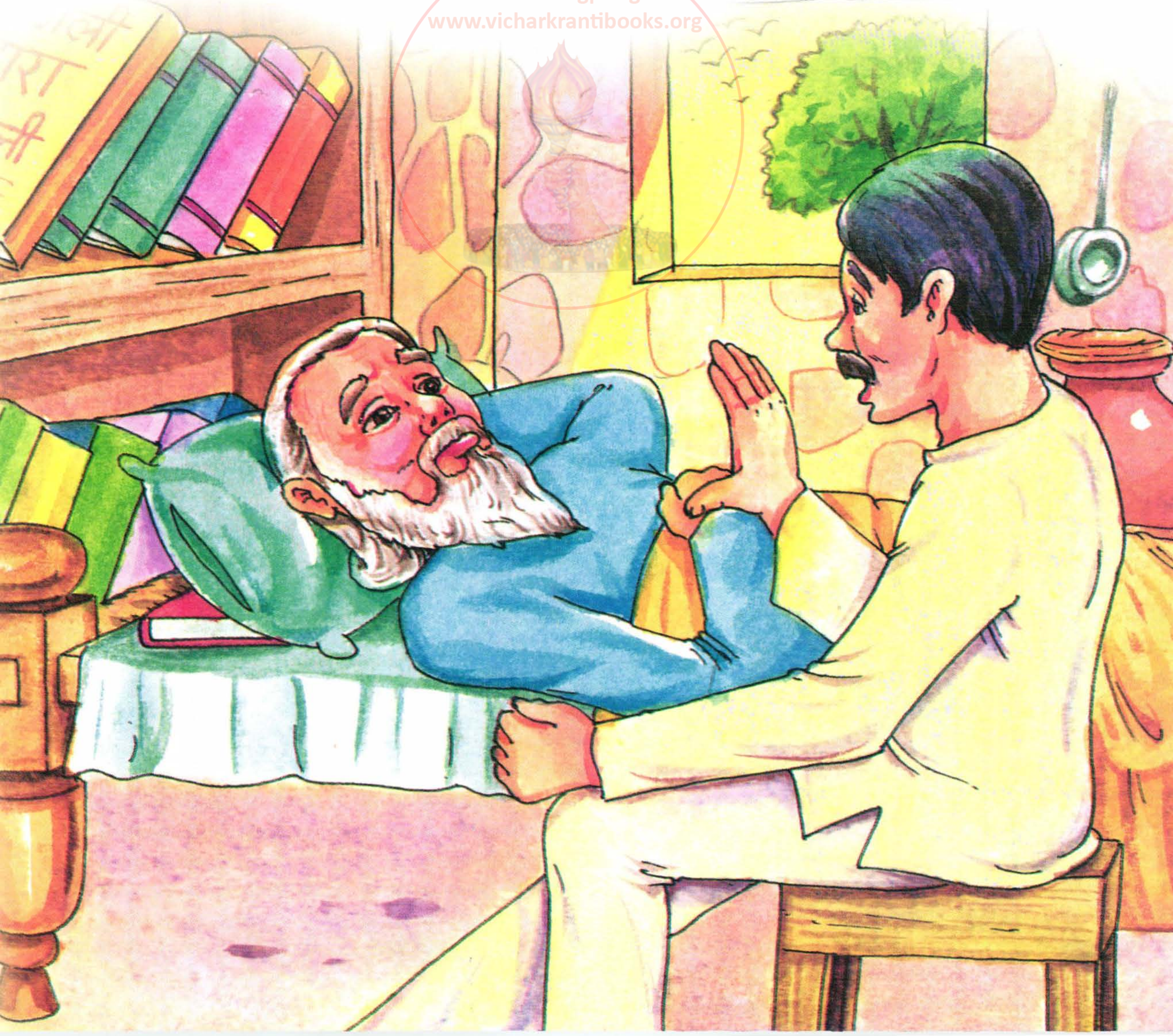

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संत द्वारा बाग की रखवाली

संत इब्राहीम ने ईश्वर भक्ति के लिए घर छोड़ दिया और वे भिक्षा माँगकर निर्वाह करके साधनारत रहने लगे। किसी किसान के यहाँ वे भिक्षा माँग रहे थे तो उसने रोककर कहा—''आप जवान हैं, परिश्रमपूर्वक निर्वाह करें। बचे समय में साधना करें। समर्थ का भिक्षा माँगना उचित नहीं।''

इब्राहीम को बात जँच गई। उनने इस सदुपदेशकर्ता का एहसान माना और पूछा—''तो फिर इतनी कृपा और करें कि मुझे काम दिला दें ताकि गुजारे के संबंध में निश्चिंत रहकर भजन करता रह सकूँ।'' किसान का एक आम का बगीचा था। उसकी रखवाली का काम सौंप दिया। साथ ही निर्वाह का प्रबंध कर दिया। दोनों को सुविधा रही।

बहुत दिन बाद आम की फसल के दिनों में किसान बगीचे में पहुँचा और मीठे आम तोड़कर लाने के लिए कहा। इब्राहीम ने बड़े और पके फल लाकर सामने रखे दिए। वे सभी खट्टे थे। नाराजी का भाव दिखाते हुए किसान ने पूछा—''इतने दिन यहाँ रहते हो

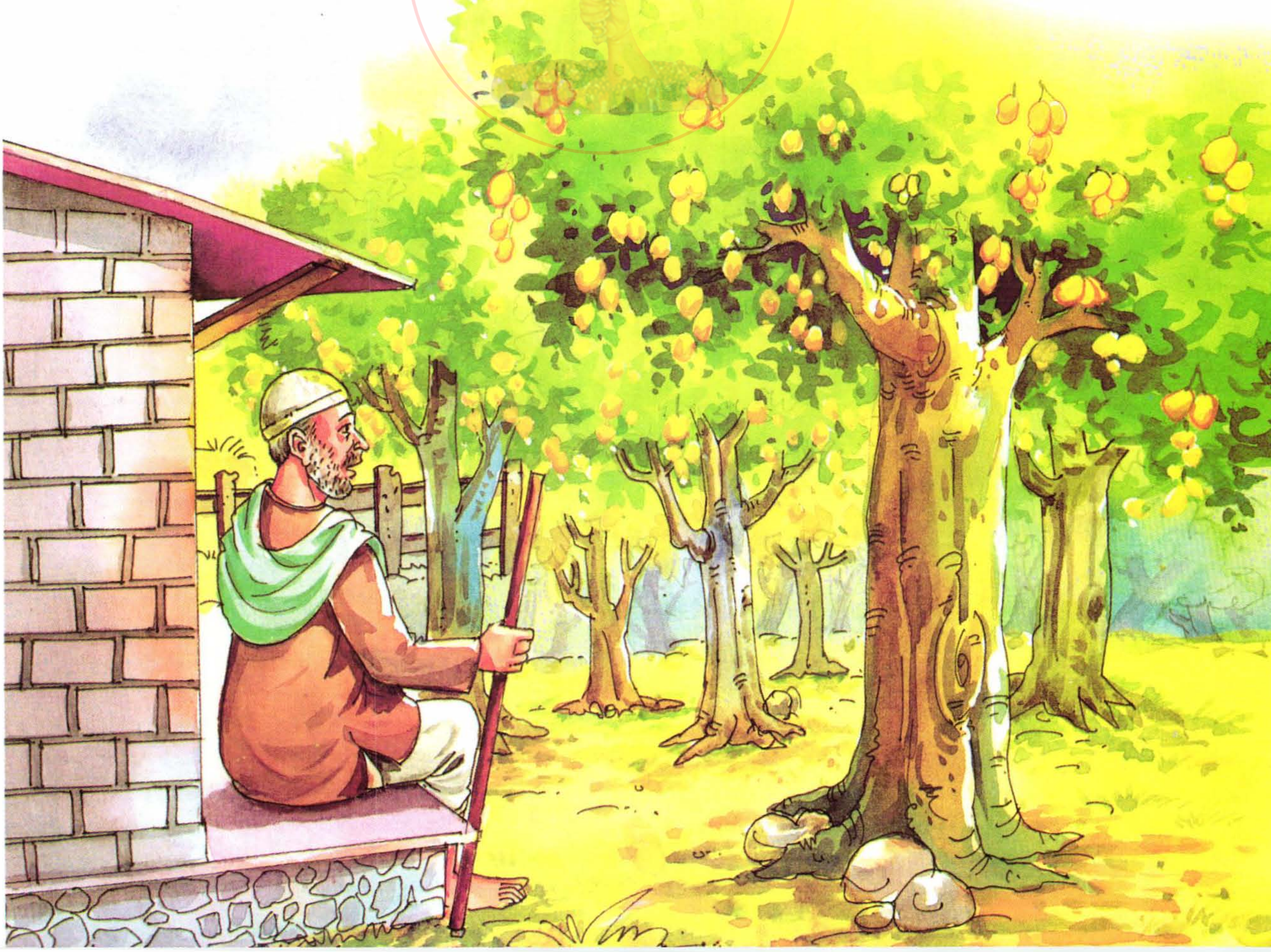

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गए, इस पर भी यह नहीं देखा कि कौन सा पेड़ खट्टे और कौन मीठे फलों का है ?''

इब्राहीम ने नम्रतापूर्वक कहा—''मैंने कभी किसी पेड़ का फल नहीं चखा। बिना आपकी आज्ञा के चोरी करके मैं क्यों चखता ?'' किसान इस रखवाले की ईमानदारी-बफादारी पर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा—''आप पूरे समय भजन करें। निर्वाह मिलता रहेगा। रखवाला दूसरा रख देंगे।''

इब्राहीम दूसरे दिन बड़े सवेरे ही उठकर दूसरी जगह चले गए। चिट्ठी रख गए—''आपने आरंभ में कहा था बिना परिश्रम के नहीं खाना चाहिए। आपकी उस अनुशासन भरी शिक्षा से ही मेरी श्रद्धा बढ़ी थी। अब तो आप ठीक उलटा उपदेश करने लगे। मुफ्त का खाने लगूँ, यह कैसे होगा ? आपकी बदली हुई शिक्षा को देखकर मैंने चला जाना ही उचित समझा।''

संस्कारों की प्रबलता सही मार्ग पर चलने वाले को कभी सही दिशा से भटका नहीं सकती।

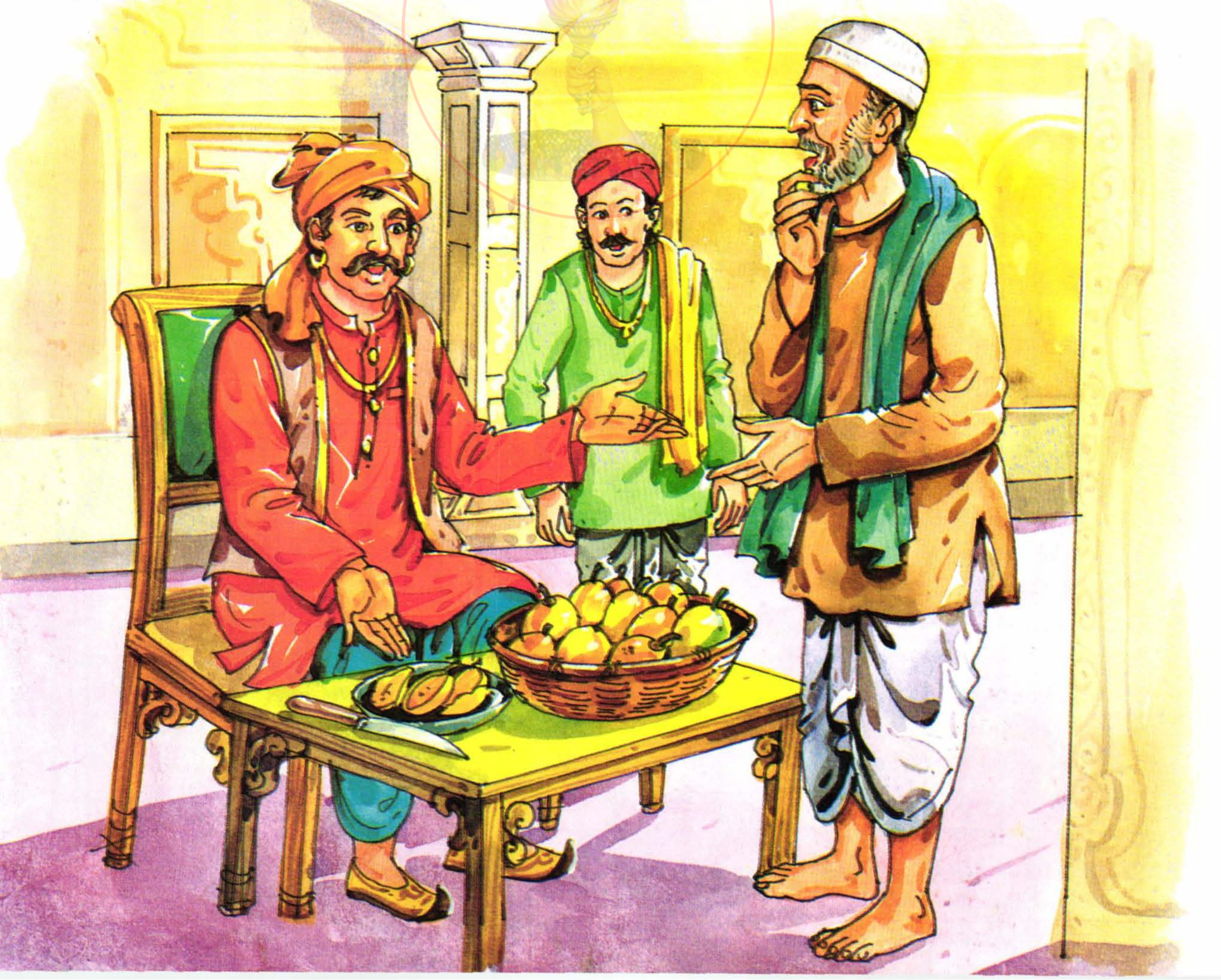

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुमत की शक्ति

एक अनाड़ी ने कहीं से सुना—रुपया रुपये को खींचता है। धन प्राप्त करने का यह तरीका उसे बहुत सरल लगा। सो एक रुपया लेकर राज्य कोषाध्यक्ष के पास गया और दूर से बार-बार अपना रुपया खजांची के रुपयों को दिखाने लगा। बार-बार ऐसा करने पर रुपया उसके हाथ से छूटकर खजांची के रुपयों में जा गिरा। अनाड़ी रोने लगा। खजांची के पूछने पर उसने सारी बात बता दी। खजांची हँसा और उसने कहा—"तुमने जो सुना था वह तो ठीक था पर इसमें इतनी कमी रह गई कि अधिक संख्या थोड़ी संख्या को अपनी ओर खींच लेती है। बहुमत की भी तो अपनी शक्ति है।"

उस व्यक्ति ने उस दिन जाना कि जहाँ श्रेष्ठ व्यक्ति समाज में बहुतायत में रहते हैं, वहाँ स्वतः ही वह समाज भी सुसंस्कारी बन जाता है। जब कभी बहुमत अनाड़ियों, दुष्टों, दुष्प्रवृत्ति प्रधान व्यक्तियों का बढ़ता है, तब सारे समूह का चिंतन, दिशाधारा व व्यवहार भी वैसा ही हो जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वरचंद विद्यासागर का त्याग

ईश्वरचंद विद्यासागर कॉलेज में ऊँचे पद पर थे। उससे भी ऊँचे पद पर उनकी नियुक्ति होने जा रही थी। अफसर उनकी योग्यता और मेहनत दोनों से ही संतुष्ट थे।

जब बात विद्यासागर जी के कान तक पहुँची, तो उन्होंने अफसरों को बड़ी नम्रतापूर्वक समझाया कि मुझसे भी अधिक विद्वान प्रफुल्लचंद राय इस समय खाली हैं, उन्हें इस पद पर नियुक्त किया जाए। मेरे लिए तो वर्तमान वेतन और पद ही पर्याप्त है। नियुक्ति उनके बताए हुए सज्जन प्रफुल्लचंद राय की ही हुई। वे इस सहायता के लिए जीवन भर कृतज्ञ रहे। अफसर भी उनके इस त्याग से चकित थे।

सामान्य लगने वाले इस त्याग का प्रदर्शन संसार में कितने लोग कर पाते हैं? पूजापाठ से ही व्यक्ति धार्मिक नहीं बनता है। ऐसे कार्य भी धर्म कहलाते हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

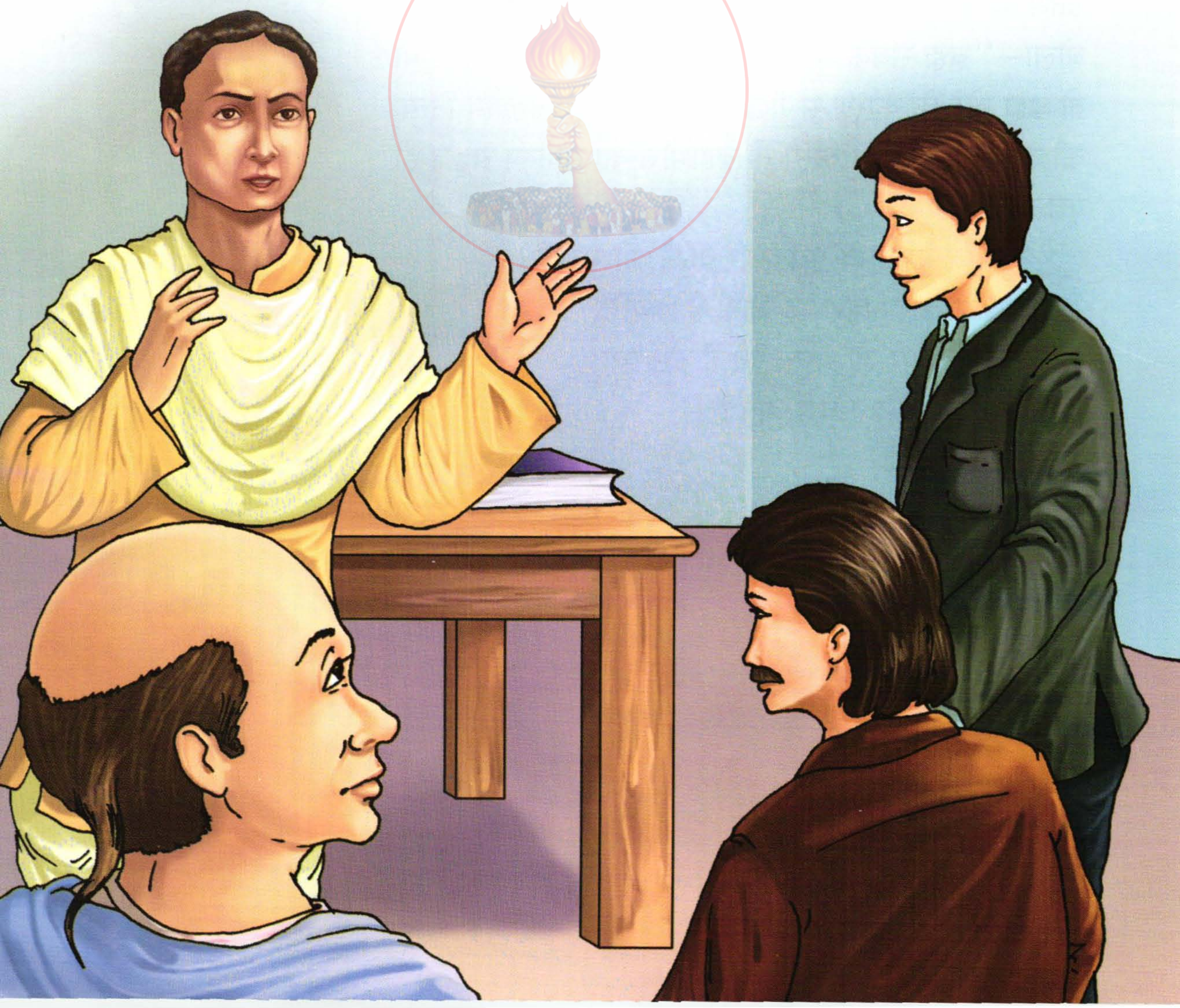

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संकट के समय की मनौती

एक जगह नारियल बिक रहे थे। एक मछुआरे ने दाम पूछा, तो उसने आठ आने बताए। वह सस्ते में देने की जिद करने लगा। दुकानदार ने कहा—"एक मील आगे चले जाओ। वहाँ नारियल का बगीचा है। सस्ते वहाँ मिलेंगे।" वहाँ पहुँचा तो भाव चार आने का था। वह और सस्ता माँगने लगा, तो दुकानदार ने कहा—"पेड़ पर चढ़ जाओ और मुफ्त में तोड़ लाओ।" वह चढ़ गया। कई नारियल लिए। पर नीचे झाँककर देखा, तो ऊँचाई से गिरने का भय लगने लगा।

उसने भगवान से प्रार्थना की यदि सही सलामत नीचे पहुँचूँगा, तो पाँच ब्राह्मणों को भोजन कराऊँगा एवं खूब दान दूँगा। धीरे-धीरे सँभल-सँभल कर उतरा। आधी दूरी पर आ गया, तो बोला—"दो ब्राह्मणों को भोजन कराऊँगा।" और नीचे उतरा तो एक की बात करने लगा। जब जमीन पर आ गया, तो बोला—"ब्रह्म सबके भीतर है। मेरे और परिवार के भीतर भी तो ब्रह्म होने के कारण सभी ब्राह्मण हैं। हम सब लोग नित्य की तरह साथ भोजन करेंगे तो ब्रह्मभोज का संकल्प सहज ही पूरा हो जाएगा।"

आपत्ति के समय परोपकार करने की मनौती प्रायः इसी प्रकार अपूर्ण रह जाती है। व्यक्ति काम पूरा होने पर जो वचन देते हैं उसे पूरा नहीं करते, यह बहुत बुरी बात है।

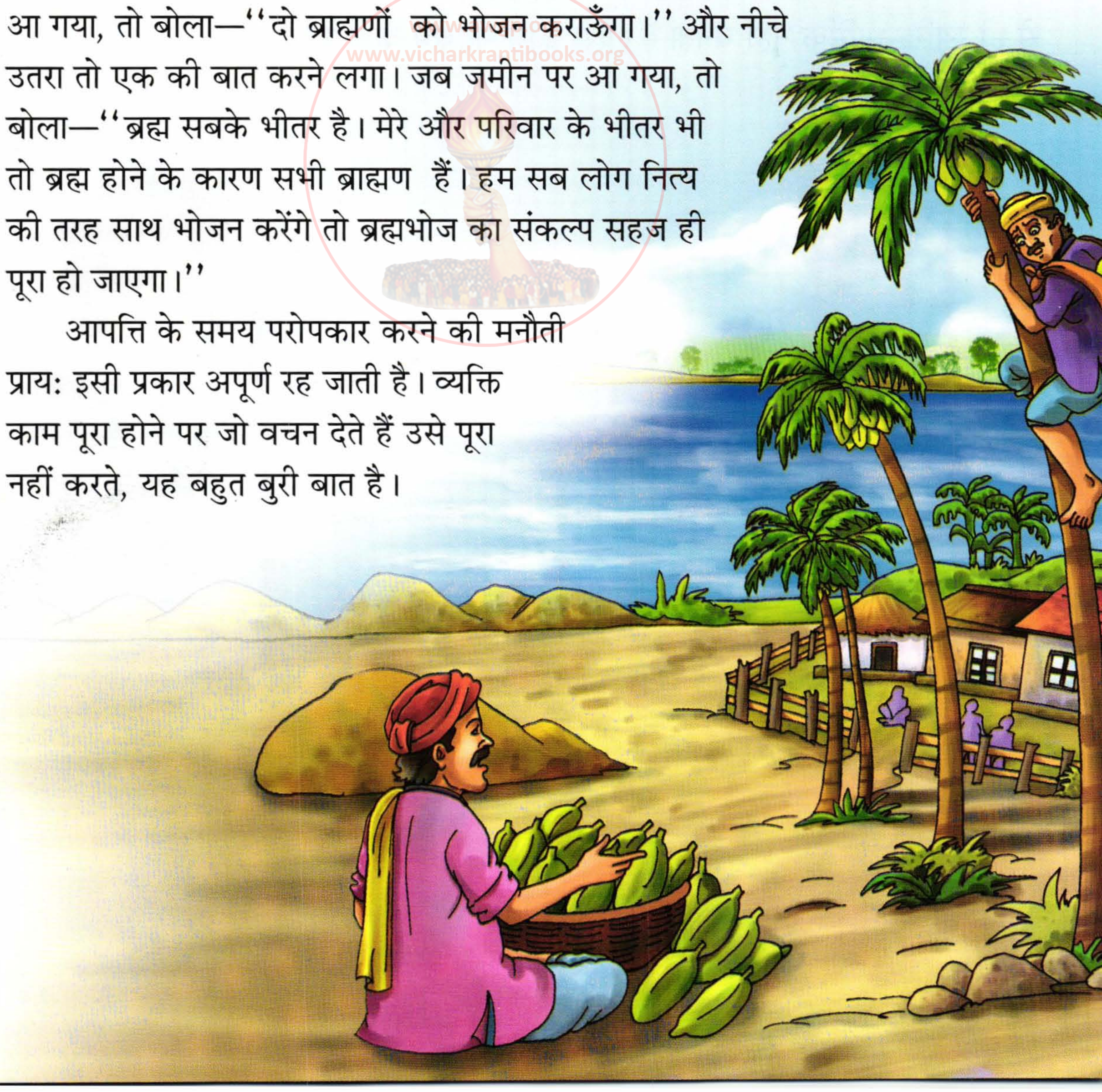

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

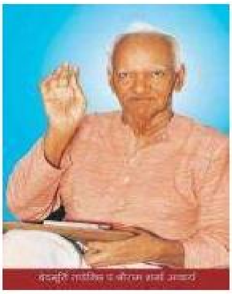

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‍घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‍बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‍भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org